सम्पादकीय

भ्रष्टाचार : गणतंत्र को खतरा

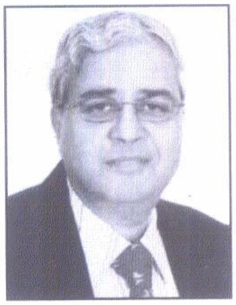

– सीताराम शर्मा

पिछले कुछ वर्षो से भ्रष्टाचार के बड़े मामले लगातार खुलकर सामने आ रहे हैं। कई पूर्व केन्द्रीय मंत्री, बड़े राजनेता शीर्ष नौकरशाह, जेल में है। २जी मामले में चर्चित घोटाले के २ लाख करोड़ की विशाल राशि के मुकाबले में १९८७ का ६४ करोड़ का बोर्फस केस बौना लगता है।

हाल के भ्रष्टाचार मामले अधिकांशतः मुख्य रूप से व्यापारियों या उद्योग घरानों की बजाय राजनेताओं से जुड़े है। जबकि पूर्व में मुख्यतः व्यापारिक घोटाले ही चर्चा में रहते थे, चाहे वह ५०-६० दशक का हरिदास मुंधड़ा काण्ड हो या हाल का सत्यम का घोटाला।

यूं तो किसी भी तरह का भ्रष्टाचार स्वीकार नहीं किया जाना चाहिये चाहे वह उद्योगपतियों द्वारा टैक्स या एम्साईज की चोरी हो या व्यापारियों द्वारा हेरा-फेरी। अभी तक भ्रष्टाचार के लिये प्रायः व्यापारियो को ही संदेह की नजर से देखा जाता है एवं उन्हें ही दोषी ठहराया जाता रहा है। सरकारी कर्मचारी भी भ्रष्टाचार के मामलों में लिप्त पाये जाते रहे है जिसके चलते साधारण व्यक्तियों को भी अपने दैनिक जीवन में इसका शिकार होना पड़ता है। नीचे से लेकर ऊपर तक फैले इस भ्रष्टाचार को रोकने में सरकार असफल रही है। वस्तुतः ज्यों-ज्यों दवा की, त्यों-त्यों मर्ज वढ़ता ही गया है। जटिल कानून, कोटा-परमिट, लाईसेंस एवं सिफारिशी व्यवस्था के शिकंजों से फंसा प्रशासन भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता रहा है। आम आदमी राशन कार्ड, पास पोर्ट से लेकर व्यापार एवं उद्योग के लिये लाइसेंस तथा बैंक से लोन लेने तक व्यवस्था का लाचार का हिस्सा बनते दिखता है। असहाय एवं असमर्थ आम आदमी ने इसे कहीं न कहीं स्वीकार कर लिया है। यहां तक कि उसमें विरोध करने की क्षमता भी समाप्त हो गयी है। वह छोटे-मोटे भ्रष्टाचार से समझौता नहीं, कभी तो कभी उसका स्वागत करता दिखता है। "पैसा देकर काम हो जाये तो इससे अच्छा क्या है" – यह बात एक ऐसे यथार्थ को स्वीकार करती दिखती है जो अशुभ एवं दुर्भाग्यजनक है।

लेकिन जो अभी तक होता आया है उससे कहीं अधिक खतरनाक वह है जो अब हो रहा है। छोटे-छोटे भ्रष्ट सरकारी कर्मचारी, छोटे या बड़े भ्रष्ट व्यापारी भी देश के गणतंत्र को खतरा नहीं थे। हमारी आर्थिक व्यवस्था एवं तरक्की को भले ही शिथिल करते हो, चोट पहुँचाते हो, आम आदमी को त्रस्त एवं हतोत्साहित करते हों लेकिन देश के गणतंत्र को उस स्तर के भ्रष्टाचार से कोई खतरा नही था।

लेकिन राजनेताओं की संख्या के आकार में बढ़ते भ्रष्टाचार ने सही मायने में गणतंत्र के सम्मुख एक बड़ा खतरा प्रस्तुत कर दिया है। जिस तरह से सामाजिक स्तर से लेकर प्रांतीय स्तर के बड़े एवं छुटभैये राजनेता एवं राजनैतिक दल भ्रष्टाचार में लिप्त नजर आ रहे है, लगता है हमाम में सभी नंगे है। अन्ना हजारे के आन्दोलन को जो जन-समर्थन प्राप्त हुआ है उससे राजनीतिज्ञों के प्रति जो अविश्वास एवं अनादर की भावना बनी है वह गणतंत्र के लिये खतरनाक है। आम आदमी का राजनेताओं एवं राजनैतिक दलों पर से विश्वास उठ रहा है। उन्हें सभी 'चोर' नजर आ रहे है। यह घोर चिंताजनक स्थिति है।

जिस तरह से सामाजिक स्तर से लेकर प्रांतीय स्तर के बड़े एवं छुटभैये राजनेता एवं राजनैतिक दल भ्रष्टाचार में लिप्त नजर आ रहे है, लगता है हमाम में सभी नंगे है।

भारत जैसे देश की एकता एवं अखंडता के लिये गणतंत्र के अतिरिक्त कोई पथ नहीं है। गणतंत्र के लिये राजनैतिक दल एवं राजनेता आवश्यक है। राजनेताओं पर से विश्वास उठने का तात्पर्य है, गणतंत्र से विश्वास उठना। चुनाव से विश्वास उठना। आम आदमी सोचता है कि निर्वाचन में भागीदारी का क्या लाभ, जिसे भी निर्वाचित करेंगे वह एक ही थैली का चट्टा-बट्टा होगा। यह सोच गणतंत्र के लिये खतरा साबित हो सकती है। यह सोच देश को एक ऐसे रास्ते की ओर ढकेल सकती है जो हमारे ढांचे को हिला सकती है। गणतंत्र का पर्याय अधिनायकवाद या सैन्य व्यवस्था भयंकर संकटकालीन स्थिति पैदा कर सकता है। सभी राजनेताओं एवं राजनैतिक दलों को एक ही काले रंग से पोतना, जिसके लिये जनता दायी नही है, घातक परिणाम प्रस्तुत कर सकते है। यह राजनैतिक दलों एक राजनेताओं के लिये खतरे की घंटी है। विश्व की कई राजधानियों में हिंसक आन्दोलन उभर रहे है – हमें समय रहते सावधान होने की आवश्यकता है।

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

अध्यक्षीय

"बदलते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य" विषयक गोष्ठी एवं एवरेस्ट विजयारोही श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल का सम्मान

– हरि प्रसाद कानोड़िया

समारोह के उद्घाटनकर्ता हरियाणा के माननीय राज्यपाल श्री जगन्नाथजी पहाड़िया, मंचस्थ श्रीमती पहाड़िया, प्रेमलता जी, सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम जी, श्री नन्दलाल जी रूंगटा, अन्य पदाधिकारी, भाईयों, बहनों, युवकों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। श्री पहाड़ियाजी ने हमारे आमंत्रण को स्वीकार कर कृतार्थ किया है। आदरणीय पहाड़ियाजी का जीवन प्रेरणा का बहता स्रोत है। श्री पहाड़ियाजी का जन्म एक छोटे से गांव में कृषक परिवार में हुआ। अपनी लगन, मेहनत से आपने उच्च शिक्षा प्राप्त की। अपने मधुर व मिलनसार स्वाभाव के साथ अध्ययनकाल से ही सामाजिक एवं राजनैतिक गतिविधियों मे अग्रसर रहे। आपने अपने परिवार, ग्राम, समाज, प्रांत और देश का नाम रोशन किया है।

बहन प्रेमलताजी के साहस की जितनी प्रशंसा की जाये, कम है। समाज की एक ऐसी महिला जो दो बच्चों की मां है, ने एवरेस्ट विजयारोहण कर इतिहास रचा है। नारी शक्ति में असीम शक्ति है।

मैं ब्रिटेन में एक मारवाड़ी महिला से मिला जो बिहार से है। अल्पायु मे ही उनका विवाह हो गया और शीघ्र ही तीन बच्चों की मां भी बन गई। अपने डाक्टर पति के साथ वे लंदन चली गई और वहां जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त की। आज वे एक विश्वविद्यालय की प्रिंसिपल है। ब्रिटेन की रानी ने उन्हें अॅवार्ड देकर सम्मानित किया है। ये हमारे लिये गौरव की बात है कि हमारी महिलाएं प्रगतिशील विचारधारा को अपना रही है और आगे बढ़ रही हैं।

एक समय था जब हमारे समाज की महिलाएं चारदीवारी व पर्दे में रहती थी, यह सम्मेलन के प्रयासों का ही प्रतिफल है कि प्रेमलता जी जैसी महिलाएं प्रतिभा दिखा पा रही हैं। लेकिन दुःख है कि आज भी हम कन्याओं का पूर्ण महत्व नहीं समझ रहे हैं। कन्या भ्रूण हत्या हो रही है। दहेज की मांग हो रही है। जबकि नारी का आदर करने से ही घर में लक्ष्मी का वास होता है।

बदलते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य पर आयोजित विषय पर रूंगटाजी, सीतारामजी ने अपना वक्तव्य रखा। हम सभी जानते है कि हमारे नैतिक मूल्यों मे निरन्तर गिरावट हो रही है। वृद्ध माता – पिता की देखभाल करने से भी हम मुँह मोड़ रहे है। निजी सम्बन्धों में कटुता बढ़ रही है। संयुक्त परिवार टूट रहे है। हमें इस पर गंभीर चिन्तन कर इसे रोकना होगा।

प्रेरक व्यक्तित्व

लोहियाजी के जीवन दर्शन का एक सशक्त पक्ष था कि वे समाज की परंपरागत उदासीनता को किसी भी कीमत पर तोड़ना चाहते थे। इस संघर्ष में विषमता के विरुद्ध वे अक्सर अकेले खड़े पाये गये पर उन्होंने धीरज कभी नहीं छोड़ा, मैदान में डटे रहे, इसीलिए वे पूंजीवाद के विरोधी थे और साम्यवाद के भी। वे न तो गांधी की तरह संत योद्धा थे, न ही नेहरु की तरह सपनों के सौदागर थे और न ही जयप्रकाश नारायण की तरह राजनीतिक विचारों के मामले में अस्थिर और जल्दबाज थे। वे सिर्फ लोहिया थे। एक योद्धा, जिसे संघर्ष में मजा आता था, जो आजादी मिलने के बाद पनप रही नीतिहीन राजनीति के विरुद्ध आंदोलन की आग में खरे सोने की तरह तप रहे थे पर उनके संघर्ष में न घृणा थी, न ही संवादहीनता।

शोक सभा / संदेश

स्व. नन्दकिशोर जालान को श्रद्धांजलि

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व. नन्दकिशोर जालान की शोक सभा में अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. आर. एम. साबू, आ.प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष नरेशचंद्र विजयवर्गीय, निवर्तमान अध्यक्ष रमेश कुमार बंग, रामपाल अट्टल, नारायण दास सारड़ा, लक्ष्मीनिवस सारड़ा व अनील सूद।

अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व. नन्दकिशोर जालान की स्मृति में आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय, बेगमबाजार में शोक सभा का आयोजन किया गया।

स्व. नन्दकिशोर जालान को श्रद्धांजलि देते हुए सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. रामबिलास साबू ने कहा कि श्री जालान विगत कई दशकों से अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के केन्द्र बिन्दु रहे। प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय स्तर के अधिवेशनों में उनकी सक्रीय सहभागिता को आज भी लोग याद करते हैं।

शोक सभा के प्रारम्भ में आ.प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष नरेशचन्द्र विजयवर्गीय एवं निवर्तमान अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने श्री जालान के चित्र पर माल्यार्पण किया। श्री बंग ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री जालान अपने युवा काल में ही सम्मेलन से जुड़ गये थे, उनकी रचनात्मक कार्यशैली से सम्मेलन के द्वारा मारवाड़ी समाज के उत्थान के लिये सार्थक प्रयास किये। सम्मेलन के प्रदेशाध्यक्ष नरेशचन्द्र विजयवर्गीय ने कहा कि श्री जालान अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र "समाज विकास" के प्रधान सम्पादक के रूप में सम्मेलन की सुदृढ़ता और समाज विकास के कार्यक्रमों के बारे में समय-समय पर लोगों में जागरूकता लाते रहे। अंत में शोक प्रस्ताव पारित किया गया। शोक सभा में नगरद्वय के कई गणमान्य बंधु उपस्थित थे।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हनुमान सरावगी का स्वर्गवास

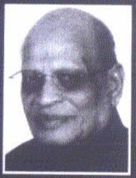

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व. सुप्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाजसेवी श्री हनुमान प्रसाद सरावगी का गत १४-१५ जुलाई की रात दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। वे कुछ दिनों से अस्वस्थ थे एवं उन्हे इलाज के लिये रांची से दिल्ली ले जाया गया था। ८० वर्षीय श्री सरावगी मारवाड़ी सम्मेलन से गहरे रूप से जुड़े थे। सम्मेलन के रांची में आयोजित १५वें राष्ट्रीय सम्मेलन के वे स्वागताध्यक्ष थे एवं जून १५५३ के दिल्ली में आयोजित १६वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अध्यक्ष थे। श्री सरावगी जी ने सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं व्यवसायिक संस्थाओं में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। आप के सुपुत्र श्री विनय सरावगी वर्त्तमान में झारखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष है।

सम्मेलन हनुमानजी के आकस्मिक एवं दुःखद स्वर्गवास पर गहन शोक व्यक्त करता है। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया एवं पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अपने शोक संदेश में श्री सरावगी के स्वर्गवास को सम्मेलन के लिये अपूर्णनीय क्षति बताया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया के स्वागत समारोह में एवरेस्ट विजयारोही प्रेमलता अग्रवाल का सार्वजनिक अभिनन्दन

हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत करते सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।

"श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल ने एवरेस्ट पर विजय का तिरंगा लहराकर विश्वभर में देश एवं समाज का सर गर्व से ऊँचा किया है।" यह कहना है हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया का। वे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से हिन्दुस्तान क्लब में "बदलते सामाजिक व नैतिक मूल्य" विषयक गोष्ठी एवं एवरेस्ट विजेता श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल के सार्वजनिक सम्मान के अवसर पर बोल रहे थे। मारवाड़ी समाज के कार्यों एवं योगदानों की सराहना करते हुए श्री पहाड़िया ने कहा कि मारवाड़ी समाज एक कर्मठ समाज है। इस समाज के लोग जहाँ भी गए, वहीं के होकर रह गए। प्रत्येक क्षेत्र में इस समाज के लोगों ने अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ी है। उन्होंने कहा कि दान धर्म में भी मारवाड़ी समाज का कोई सानी नहीं। भामाशाह इतिहास में दर्ज हैं। आजादी की लड़ाई में सेठ घनश्यामदास बिड़ला, जमना लाल बजाज, सेठ गोविन्ददास आदि ने क्रांतिकारियों को धनबल से भरपूर मदद की थी। हरियाणा के बाबु बालमुकुन्द गुप्त का सामाजिक योगदान तो अमूल्य है। इसके अलावा स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, धर्मशाला आदि खोलकर भी मारवाड़ी समाज ने सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज धन दौलत का दिखावा न करे एवं अपनी संस्कृति बरकरार रखे। नयी पीढ़ी को भी यही शिक्षा दे।

एवरेस्ट फतह के लिए इस अवसर पर राज्यपाल जगन्नाथ पहाड़िया ने श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल को संस्था का स्मृति चिन्ह् भेंट कर सम्मानित किया। श्री पहाड़िया की धर्मपत्नी श्रीमती शांति देवी ने एक साड़ी भेट की एवं सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने २१ हजार की राशि का एक चेक प्रदान कर एवरेस्ट विजयारोही श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल को सम्मानित किया। प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने पुष्प गुच्छ भेंट किये।

इस सम्मान से अभिभूत जमशेदपुर निवासी एवरेस्ट विजेता श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल ने कहा कि सत्संकल्प, दृढ़ निश्चय व इच्छाशक्ति, एकता, सहनशीलता एवं टीम वर्क के बगैर यह सफलता असम्भव थी। उन्होंन कहा कि किसी भी कार्य में सफलता के लिए निरंतर प्रयासरत रहना जरूरी है। पर्वतराज को चूमने में हमारी आंतरिक इच्छाशक्ति का मात्र दस प्रतिशत ही खर्च हुआ। श्रीमती अग्रवाल ने कहा कि शादी के बाद यदि पत्नी किसी निर्धारित लक्ष्य को पूरा करती है तो इसका श्रेय उसके पति को ही जाता है।

श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल को संस्था का स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया।

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने श्रीमती प्रेमलता की सराहना करते हुए कहा कि प्रेमलता के साहस की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। मारवाड़ी समाज की इस महिला ने एवरेस्ट विजयारोहण कर इतिहास रचा है। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति का एक वो समय था, जब महिलाएं पर्दे में रहा करती थी। यह मारवाड़ी सम्मेलन के प्रयासों का ही प्रतिफल है कि प्रेमलता जैसी महिलाएं प्रतिभा दिखा रही है। वे सम्मान की पात्र हैं। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने एवरेस्ट विजयारोही श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल एवं हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया का अभिवादन करते हुए कहा कि पहाड़िया जी का सहयोग सम्मेलन को पूर्व में भी मिलता रहा है। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज सिर्फ एक व्यवसायिक समाज ही नहीं है अपितु शिक्षा, विज्ञान, कला, साहित्य, राजनीति, खेलकूद आदि सभी क्षेत्रों में मारवाड़ी समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। आज के सामाजिक व नैतिक मूल्यों पर चर्चा करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि इसमें निरंतर गिरावट आ रही है और यह सिर्फ मारवाड़ी समाज के लिए ही नहीं बल्कि अन्य समाज के लिए भी चिंता का विषय है। श्री शर्मा ने कहा कि समाज में धनबल का प्रभाव बढ़ा है। वैवाहिक एवं धार्मिक आयोजनों में बढ़ती फिजूलखर्ची चिंता का विषय है। प्रगति प्रत्येक क्षेत्र में हो रही है लेकिन सामाजिक व

श्रीमती शांति देवी पहाड़िया का स्वागत करती सम्मेलन की प्रथम महिला श्रीमती कानोड़िया।

राज्यपाल श्री पहाड़िया का सम्मान करते हुए सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया।

नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि गणतंत्र को बचाना है, नहीं तो देश फासीवाद की ओर चला जाएगा। संस्था के निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने कहा कि प्रेमलता ने एवरेस्ट फतह कर समाज का जो गौरव बढ़ाया है, वह आनेवाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। प्रेमलता ने मारवाड़ी समाज की पहचान बनायी है। गिरते नैतिक व सामाजिक मूल्यों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री रुंगटा ने कहा कि नयी पीढ़ी को संस्कारों की जरुरत है।

इससे पूर्व संस्था के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने स्वागत वक्तव्य रखा। कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया एवं उनकी धर्मपत्नी शांति देवी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन किया संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका ने एवं धन्यवाद ज्ञापन दिया सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार ने। अपने धन्यवाद ज्ञापन में श्री पोद्दार ने श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल के कार्य की सराहना करते हुए इसे समाज के लिए प्रेरणादायी बताया। उन्होंने कहा– "प्रेमलता ने समाज के लिए कीर्तिमान स्थापित किया है।"

इस अवसर पर सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, पूर्व महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी, पद्मश्री मामराज अग्रवाल, डॉ जे. के. सराफ, श्री प्रहलाद राय अग्रवाल, श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, श्री संतकुमार कसेरा आदि कई गणमान्य उपस्थित थे।

पूर्वी सिंहभूम जिला मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया को "मरुधर" पुस्तक भेंट की गयी। सभा का समापन सहभोज से हुआ।

स्वागत भाषण

यह हमारे लिये गर्व एवं गौरव का विषय है कि देश के वरिष्ठ राजनेता, राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान में हरियाणा के राज्यपाल माननीय महामहिम श्री जगन्नाथ जी पहाड़िया सपत्नीक हमारे बीच पधारे हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को माननीय श्री पहाड़िया जी का आशीर्वाद इसके पूर्व भी प्राप्त हुआ है। कोलकाता में प्रस्तावित सम्मेलन भवन के निरीक्षण के लिये आप पधारे थे, इसकी मधुर स्मृति आज भी हमारे हृदय में है।

सम्मेलन की १४ राज्यों में प्रान्तीय शाखाएं सक्रिय रूप से समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में कार्य कर रही है। सम्मेलन की कौस्तुभ जयंती का उद्घाटन हाल ही में भारत के राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल के कर कमलों से कोलकाता में हुआ।

– संतोष सराफ
राष्ट्रीय महामंत्री

खचाखच भरे हाल में विशिष्ट उपस्थिति।

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of -the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

जन्मदिन व शादी की सालगिरह में भी दिखावा!

संतोष सराफ
महामंत्री

मारवाड़ी समाज में लम्बे अर्से से दिखावा, आडम्बर और फिजूलखर्ची के खिलाफ आवाज उठती चली आ रही है लेकिन वास्तव में तमाम विरोधों के बावजूद स्थिति न सिर्फ जस की तस है बल्कि और विकराल रूप धारण करती जा रही है। समाज में दिखावा और आडम्बर की स्थिति को यह कहावत कि 'ज्यों ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता गया' चरितार्थ करती है। ऐसा नहीं है कि समाज में इसका विरोध नहीं हुआ। सार्वजनिक तौर पर विरोध हुआ, कई बार तो दिखावा और आडम्बर के खिलाफ नियम-कानून बनाए गए तथा सभा मंचों से समाज के लोगों से अपील की गई। मगर हमेशा से समाज में एक वर्ग इस तरह का भी रहा है, जिसके गले-तले यह बात नहीं उतरती रही। इस वर्ग का मानना है कि जिसके पास पैसा है, वह क्यों नहीं खर्च करेगा? आखिर पैसे वाला अगर अपने बेटे-बेटी के शादी-व्याह में खर्च नहीं करेगा, तो कब करेगा। तरह-तरह की दलीलें दी जाती रहीं। शादी-व्याह के मौके पर अनाप-शनाप खर्च करना और खाने-पीने में लाखों रुपए व्यय कर झूठी शान में भोज्य पदार्थों की बर्बादी करना एक तरह से प्रचलन बन गया है। शादी-व्याह की बात अब दूर हो गई अब तो लोग जन्मदिन और शादी की सालगिरह के अवसर पर भी अपने वैभव का दिखावा करने लगे हैं। पहले शादी-व्याह के अवसर पर छपवाए जाने वाले निमंत्रण कार्डो पर उंगली उठाई जाती थी, कहा जाता था कि निमंत्रण कार्डों पर बेवजह भारी खर्च किया जाता है लेकिन अब तो जन्म दिन और शादी की सालगिरह के मौके पर भी छपवाए जाने वाले कार्डों में भारी खर्च दिखने लगा है।

> **एक तरह हमारे समाज में लोग अपनी बेटियों के हाथ पीले करने के लिए 'पापड़ बेल' रहे हैं तो दूसरी तरफ जन्मदिन और शादी की सालगिरह के अवसर पर लम्बे-चौड़े आकर्षक कार्ड छपवाकर पार्टियां दी जा रही हैं, और लाखों रुपये पानी की तरह बहाए जा रहे हैं।**

क्या वास्तव में जन्म दिन और शादी की सालगिरह सार्वजनिक तौर पर मनाई जानी चाहिए? क्या इस मौके पर निमंत्रण कार्ड छपवा कर समाज के लोगों को आमंत्रित किया जाना चाहिए? क्या ऐसे आयोजन अपने अति करीबी पारिवारिक जनों तक नहीं सीमित रखे जा सकते? मेरा तो मानना है कि जन्म दिन और विवाह की वर्षगांठ जैसे अवसरों पर सीमित दायरे में आयोजन होने चाहिए और पारिवारिक जनों तक ही सीमित रखे जाने चाहिए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो निकट भविष्य में यह एक परम्परा का रूप धारण कर लेगी और मेरी समझ में शायद इसे परम्परा न कह कर कुपरम्परा की संज्ञा दे दी जाएगी। यह बहुत गंभीर मसला है, जिस पर गंभीरता के साथ चिंतन भी होना चाहिए क्योंकि मेरा मानना है कि सामाजिक मुद्दों पर सहमति से, गंभीर चिंतन से ही कोई नतीजा निकल सकता है। हमें ऐसा कोई मौका नहीं देना चाहिए जिससे कि समाज का कोई वर्ग या आने वाली पीढ़ी हमें दोषी ठहरा सकें या कुपरम्परा को बढ़ावा देने वाला ठहरा सकें। मारवाड़ी समाज ने समाज को बहुत कुछ दिया है। हमारे पूर्वजों ने अनिवार्य रूप से दान देने की जो परम्परा शुरु की थी, उसकी आज भी प्रशंसा हो रही है। वास्तविकता के धरातल पर खड़ा होकर अगर देखा जाए तो समाज में ज्यादातर धर्मशालाओं, अस्पतालों, कॉलेजों और स्कूलों का निर्माण हमारे समाज के ही पूर्वजों ने करवाया था। पूर्वजों ने एक परम्परा बना कर रखी थी कि जो भी कमाएंगे, उसका एक निश्चित हिस्सा धर्मादा के कार्यों के लिए भी निकालते रहेंगे। यह परम्परा कमोबेश आज भी जारी है। भले ही दान देने का तरीका बदल गया हो लेकिन एक बात सच है और वह यह है कि समाज के लोग आज भी सेवा कार्यों के लिए दान देने से नहीं हिचकते। इस तरह से हमें अपनी अच्छी परंपराओं को विस्तरित करते हुए किसी भी तरह की कुपरंपराओं के जाल में नहीं फंसना चाहिए। इसी में समाज का भला भी है। अगर हम यह सोचते हैं कि जन्म दिन और शादी की सालगिरह की पार्टियों में भारी-भरकम खर्च कर, बड़े पैमाने पर दिखावा कर या भारी परिमाण में उपहारों का वितरण कर वाह-वाही लूट रहे हैं तो यह शायद यह हमारी भूल है क्योंकि अक्सर देखा जाता है कि लोग इस तरह के आयोजनों में बुलाने पर शामिल तो जरूर होते हैं लेकिन आयोजन स्थल से बाहर होते ही आलोचना करना शुरू कर देते हैं।

परोपकारी मारवाड़ी समाज.......

(शेषांश)

– परमजीत नायडू

आखिर मारवाड़ी व्यापार में सबसे ज्यादा सफल क्यों हैं? इसका एक ही उत्तर है। संयम, सहनशीलता और विपरीत परिस्थितियों में क्रोध को पी जाना। यह तभी संभव है जब रग-रग में अहिंसा का बीज मंत्र हो। अहिंसा के प्रवर्त्तक भगवान महावीर को पूजने वालों में अग्रणी है राजस्थान और गुजरात। इसी अहिंसा के कारण यह दोनों समाज निरन्तर तरक्की कर रहे है। गांधी जी ने भी अहिंसा का मूल मंत्र भगवान महावीर से लिया था। गांधी जी का अहिंसा पर कहना था – (१) कमजोर कभी क्षमा नहीं कर सकता, क्षमाशीलता ताकतवर का गुण है। (२) अहिंसा का अर्थ है क्षमाशीलता – क्षमाशीलता का ही चरमबिंदु है अहिंसा (३) (ए) अहिंसा सर्वोच्च आदर्श है। यह निर्भीक व्यक्तियों के लिये है, कायरों के लिये नहीं। (बी) अहिंसा किसी की हत्या करने या किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने की इच्छा का समूल नाश कर देना है। (सी) अहिंसा सर्वोच्च कर्त्तव्य है। यद्यपि हम इसका पूरी तरह पालन नहीं कर सकते, हमें इसके पीछे छिपी भावना को समझने और जहां तक हो सके इसको अपनाने की कोशिश करनी चाहिये। (डी) अहिंसा का अर्थ है अगाध्य प्रेम और प्रेम का अर्थ है कष्ट सहने की अपार क्षमता। (ई) अहिंसा का अर्थ है क्रोध और घृणा से पूर्ण मुक्ति तथा सबके लिये प्रेम से भरा हुआ हृदय। अभी पूरा विश्व आर्थिक मंदी से गुजर रहा है। अमरीका धन से फिलहाल खोखला हो गया है। उसे पूरी तरह व्यवस्थित होने में कम से कम २ से ३ साल लगेंगे। पर मारवाड़ी समाज और गुजराती समाज के व्यवसाय करने के सब गुर जन्मजात हैं। जैसी भी मन्दी हो, हम उभर सकते है और वह भी आप लोगों के बदौलत ही। इतिहास के पन्ने गलत नहीं हो सकते। गाय की पूजा के बारे में दोनों समाजों से गांधी जी ने कहा – 'जिस धर्म में गाय की पूजा को मान्यता दी जाती है, उसमें मनुष्यों के प्रति पक्षपात अथवा उनके क्रूर और अमानुषिक बहिष्कार को स्वीकृति नहीं मिल सकती।' उन्होंने नसीहत दी – 'समाज के गरीब वर्ग के सहयोग बिना धनिक वर्ग धन-दौलत जमा नहीं कर सकता।' गांधी जी की नसीहत को इन दोनों समाजों ने गांठ बांध लिया। निरन्तर प्रगति के पथ पर ही है।

गणेश टॉकीज के पास एक होमियोपैथिक चिकित्सालय में डा. स्वर्गीय मोहनलाल जी केडिया ने करीब ३० साल तक गरीबों की मुफ्त सेवा की थी। आज उन्हीं के सुपुत्र डा. रमेश केडिया भी पिता के पदचिह्नों पर चल रहे हैं। 'ढ़ांढ़ण सती' के रूप में सुभाष भरतिया नामक एक सफल व्यापारी हर साल 'ढ़ांढ़ण सती' का अनुष्ठान अपने बल बूते पर भव्य रूप से आयोजित कर मनाना नहीं भूलते। आज भी गुजराती समाज में श्री मनू भाई कटारिया हर रोज ५०० रोटियां लिलुआ में गायों को खिलाने का नियम करीब बीस साल से पालन कर रहे हैं। धन्य हैं डा. रमेश केडिया, सुभाष भरतिया और मनू भाई कटारिया सरीखे लोग, मारवाड़ी और गुजराती समाज में ढेरों इस किस्म के परोपकारी लोग हैं।

गांधीजी ने एक जबरदस्त संदेश दिया था। गांधी जी के शब्दों में ही –

(i) दहेज - कोई भी युवक जो दहेज को विवाह की शर्त बनाता है, वह नारी जाति का अपमान करता है। साथ ही, अपनी शिक्षा और अपने देश का नाम भी कलंकित करता है। मां-बाप को अपनी लड़कियों को इस प्रकार शिक्षित करना चाहिये कि वे दहेज लोलुप युवकों से विवाह करने की अपेक्षा अविवाहित रहना ही पसन्द करे।

(ii) शादियों में फिजूलखर्च - बहादुर युवकों को अपने विवाह के अवसर पर फिजूलखर्चियों के खिलाफ विद्रोह करना चाहिए।

कलकत्ते में १९३० में कुन्ती जाजोदिया नाम की लड़की मारवाड़ी समाज की पहली लड़की थी जिसने मैट्रिक पास किया था। १९३५ में जब अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन स्थानीय मोहम्मद अली पार्क में हुआ तो उस अधिवेशन में स्त्री शिक्षा (मारवाड़ी समाज का) पर ज्यादा जोर दिया गया था। उस समय सिर्फ दो (२) लड़कियां मारवाड़ी समाज की मैट्रिक पास थी – एक कुन्ती जाजोदिया और दूसरी शांति खेतान। आज २००९ में मारवाड़ी समाज की लाखों लड़कियां उच्च शिक्षा ग्रहण करके बड़ी-से-बड़ी नौकरियां कर रही हैं, व्यापार कर रही हैं। स्पेसियलिस्ट डाक्टर, इंजीनियर और नेता बन गई हैं। कलकत्ता मारवाड़ी समाज में १९२० के वक्त कलकत्ता मारवाड़ी छात्रावास में 'ग्रेजुएट' गिने चुने तीन-चार ही थे। आज हर क्षेत्र में मारवाड़ी समाज सैकड़ों नहीं लाखों की संख्या में पढ़े लिखे लड़के या लड़की का Man Power Supply कर सकता है। (समाप्त)

प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने किया

मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं सीकर नागरिक परिषद् (कोलकाता) के संयुक्त तत्वाधान में १० जुलाई २०११ को ज्ञानमंच में एक कार्यक्रम आयाजित कर आईसीएसई, आईएससी, सीबीएसई एवं वेस्ट बंगाल बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजुकेशन की कक्षा १० एवं १२ वीं की परीक्षा में उत्कृष्ट अंक पाने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री गणेश वंदना एवं स्वागत गीत से हुआ। तदोपरांत अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने दीप प्रज्जवलित कर समारोह का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री कानोड़िया ने कहा कि सम्मान करके उत्साह बढ़ाना होता है ताकि बच्चे भविष्य में भी इसी प्रकार मेहनत करते रहे। उन्होंने कहा कि इससे दूसरे बच्चों को भी प्रेरणा मिलती है कि वे भी कुछ करें। सम्मान से छात्र-छात्राओं का मनोबल बढ़ता है। सभागार में उपस्थित छात्रों को संबोधित करते हुए श्री कानोड़िया ने कहा कि जीवन में इसी प्रकार मेहनत करते रहें। जीवन में मेहनत का बहुत महत्व है। कहा भी गया है कि मेहनत का फल मीठा होता है। अतः मेहनत करें, मेहनत के बिना कुछ नहीं होता। उन्होंने भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम का उदाहरण देते हुए कहा कि वो एक बहुत ही साधारण परिवार से थे। नौ भाई बहनों में सबसे छोटे। अखबार बांट व बेच कर पढ़ाई की फिर भी अपनी मेहनत से राष्ट्रपति बने। उन्होंने कहा कि वे (डॉ. कलाम) भी बच्चों से बहुत प्यार करते है। बच्चों को संबोधित करते हुए श्री कानोड़िया ने कहा कि भगवान को पूजा करने की नहीं बल्कि उन्हें याद रखने की जरूरत है। बच्चों को राम, कृष्ण, हनुमान जैसे चरित्रों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, साथ में है प्रांतीय सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया।

इससे पूर्व प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्मेलन शिक्षा को सबसे जरूरी समझता है। उन्होंने बताया कि सम्मेलन की ओर से समाज के गरीब बच्चों को फीस व पुस्तकें मुहैया करवायी जाती है। बच्चों के लिए शीघ्र एक छात्रावास के निर्माण का भी निर्णय लिया गया है। सम्मेलन के महासचिव श्री

एक मेधावी छात्र को संस्था का स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित करते श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।

उत्कृष्ट अंक प्राप्ति हेतु एक मेधावी छात्र को संस्था का स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित करते प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया।

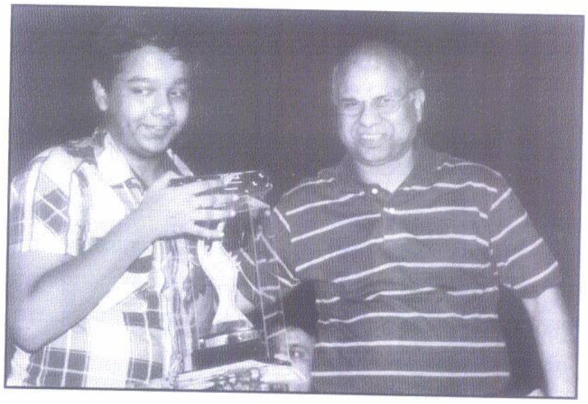

एक मेधावी छात्र को संस्था का स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित करते अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ।

रामगोपाल बागला ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। बताया कि इस वर्ष सम्मेलन ने एक लाख साठ हजार रुपयों की स्कूल फीस एवं पुस्तकें छात्र-छात्राओं को मुहैया करायी है। आगामी वर्ष हेतु पाँच लाख रुपयों का फंड इकट्ठा करने की योजना है। कहा कि समाज की कोई भी कन्या आर्थिक अभाव में अनब्याही न रहे, इसके लिए निर्धन कन्याओं को एक लाख रुपए तक की मदद देकर उनका विवाह करवाया जा रहा है। इस वर्ष सम्मेलन ने तीन कन्याओं के विवाह हेतु तीन लाख रुपयों का सहयोग दिया है। उद्योगपति श्री बनवारी लाल मित्तल एवं श्री सूर्य प्रकाश बागला ने कहा कि उच्च शिक्षा की वजह से ही आगे बढ़ा जा सकता है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने अपने संक्षिप्त संबोधन में बताया कि सम्मेलन की ओर से गरीब व मेधावी बच्चों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए एक कोष बनाया गया है ताकि अर्थ के अभाव में समाज का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रह सके।

सीकर नागरिक परिषद् के अध्यक्ष श्री घनश्याम सोभासरिया ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यक्रम की सराहना की। श्री विजय डोकानिया, श्री रवि मोदी, श्री श्याम सुंदर चौधरी, श्री त्रिलोक चंद डागा, श्री दामोदर प्रसाद विदावतका आदि कई गणमान्य समारोह में उपस्थित थे। संचालन ऋचा अग्रवाल ने किया।

प्रसंगवश

एक पल नफरत, दूसरे पल प्यार!

राजनीति में रहते हुए आदमी मनुष्यता के पद से गिरता है, राजनीतिक टकराहटें दुश्मनी में बदलती हैं। लोकसभा में अक्सर चार बजे के बाद बहस के दौरान डॉ लोहिया मंत्रियों के विरुद्ध आग उगलते थे। हालत यह हो जाती कि बात कांग्रेसी सदस्यों के सहन के बाहर हो जाती। कभी ऐसा नहीं हुआ जब डॉ लोहिया ने सरकारी नेताओं को कड़वी-से-कड़वी बात न कही हो। मगर घंटे भर बाद ही, सदन स्थगित होने पर उन्हें डॉ. रामसुभग सिंह या किसी अन्य कांग्रेसी के गले या हाथ में याराना ढंग से हाथ डाले, हंसते और मजाक करते हुए बाहर निकलते देखा जा सकता था। क्षण भर पहले के क्रुद्ध चेहरे पर अनोखी उत्फुल्लता होती। मैं यह दृश्य कभी नहीं भूल सकता। यह आकस्मिक नहीं है कि डॉ. लोहिया की शवयात्रा में सबसे बड़ी संख्या में मंत्री और संसद सदस्य शामिल हुए, जिनसे डॉ. लोहिया की लगातार झड़पें हुआ करती थीं। डॉ. लोहिया की मृत्यु के साथ ही यह भ्रमजाल समाप्त हो गया कि उनका कोई नहीं। डॉ. लोहिया के लिये जितने आंसू बहाये गये, गांधी जी के बाद शायद ही किसी आदमी के लिये बहाये गये हों।

हिन्दी को अल्पसंख्यक भाषायी दर्जा

ममता को हार्दिक बधाई – सीताराम शर्मा

समाज चिन्तक एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी को एक पत्र लिखकर राज्य सरकार द्वारा हिन्दी को अल्पसंख्यक भाषा का दर्जा देने के महत्वपूर्ण फैसले के लिये हार्दिक बधाई दी है। इस निर्णय का स्वागत करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि यह प्रथम अवसर है जब हिन्दी भाषियों की भावना की कद्र करते हुए नयी पश्चिम बंगाल सरकार ने हिन्दी को बढ़ावा देने के लिये एवं भाषायी आधार पर हिन्दी अल्पसंखकों के हितों की रक्षा के लिये यह ऐतिहासिक कदम उठाया है।

श्री शर्मा ने खुशी व्यक्त की कि सरकार के पदभार ग्रहण करने के पहले महीने में ही हिन्दी भाषियों की वर्षों पुरानी माँग पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सकारात्मक फैसला लिया है। इस निर्णय से जहाँ एक तरफ हिन्दी भाषियों को शिक्षा, रोजगार, सरकारी कार्यालय आदि क्षेत्रों में नयी सुविधाएँ मिलेगी वहीं उनकी प्रतिष्ठा एवं आत्म सम्मान को भी बढ़ावा मिलेगा।

राज्य में तीस फीसदी से अधिक बसे हिन्दी भाषियों को भाषायी अल्पसंख्यक के रूप में मान्यता प्रदान कर सरकार ने व केवल हिन्दी भाषा को मर्यादा प्रदान की है, साथ ही हिन्दी भाषियों के प्रति ममता बनर्जी की यथोचित एवं सकारात्मक सोच का भी परिचय दिया है। श्री शर्मा ने विश्वास व्यक्त किया कि ममता बनर्जी की सरकार बंगाल में हिन्दी भाषियों के साहित्यिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विकास को बढावा देने में सदैव सहयोग एवं समर्थन प्रदान करेंगी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

वैवाहिक आचार संहिता

- **मिलनी सबकी ४ रुपया।**
- **अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।**
- **विवाह मे दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।**
- **कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपाएं।**
- **नेग का कार्यक्रम एक ही हो।**
- **सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष भी वहन करें।**
- **बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब आदि का उपयोग वर्जित हो।**
- **रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।**

सम्मेलन धार्मिक व अन्य सामाजिक समारोहों में भी सादगी बरतने की अपील करता है।

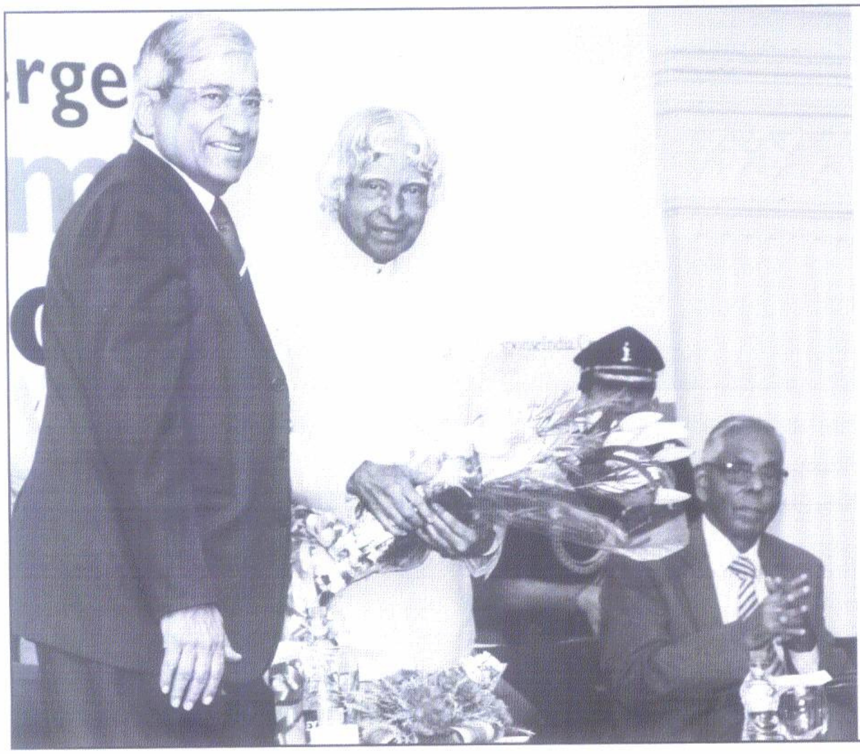

हम साथ है

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी एवं मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्य श्री हरिप्रसाद बुधिया भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एवं पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री एम. के नारायणन के साथ।

पत्रकारिता पर हावी होती खुदगर्जी

यही सुनकर पत्रकारिता में आया था कि समाचार पत्र समाज का आईना होता हैं और पत्रकार कलम का सिपाही। सचमुच आज से १०-१५ साल पहले तक यह सही भी था, लेकिन बीते कुछ सालों में जब से इलेक्ट्रानिक मीडिया का चलन बढ़ा है, तब से पत्रकारिता की पूरी परिभाषा ही मानो बदल गई है। ऐसा नहीं है कि १५ साल पहले प्रबंधन या विज्ञापन विभाग से समाचार विभाग को कोई लेना-देना नहीं था। प्रबंधन, विज्ञापन और समाचार विभाग में गजब का तालमेल था और सभी विभाग अपनी-अपनी सीमा और मर्यादा को भली-भांति समझते थे, लेकिन इन सालों में संपादक कहने भर को रह गए हैं, सारा नियंत्रण प्रबंधन का है। यही कारण है कि संपादक न तो खुलकर अपने विचार प्रकट कर सकता है, न सटीक संपादकीय लिख सकता है और न ही अपने रिपोर्टर से खोजी व जोखिस भरी पत्रकारिता करने की सलाह या हुक्म दे सकता है। कुल मिलाकर इन दिनों बड़े घरानों के लिए अखबार निकालना, मंत्रालय व मंत्री स्तर पर अपनी पहुंच बनाने का जरिया बन गया है और पत्रकारों के लिए मात्र रोजी-रोटी का साधन। ऐसी विकट और दुखद स्थित में अब यह नहीं समझ में आ रहा है कि जान-जोखिम में डालकर खबर लाने वाले पत्रकारों में अब खुदगर्जी क्यों हावी होती जा रही है?

काफी मनन करने पर पुख्ता तौर पर तो नहीं, हां मोटे तौर से जरूर कुछ समझ पाया कि कभी समाज को सच्चाई से अवगत करने के उद्देश्य से खबर छापने वाले अखबार अब विज्ञापन पाने के लिहाज से खबर बनाते व प्रकाशित करते हैं। वहीं, समाचार एकत्रित करने के लिए पसीना बहाने वाला पत्रकार इन दिनों उपहार (गिफ्ट) हासिल करने में दिन-रात एक किए हुए है।

– शंकर जालान

पश्चिम बंगाल हिन्दी अकादमी का गठन

राज्यपाल एम.के. नारायणन ने नयी सरकार के अनुरोध पर सूचना व संस्कृति विभाग के अधीन पश्चिम बंगाल हिन्दी अकादमी का गठन किया है। विवेक गुप्त को इस अकादमी का अध्यक्ष बनाया गया है। इनके अलावा अकादमी में १२ और सदस्य हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्य में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए काफी विचार-विमर्श के बाद इस परिषद के सदस्यों का चयन किया है। अकादमी के अध्यक्ष विवेक गुप्त के अलावा डॉ. अरुण चुड़ीवाल, पुष्कर लाल केडिया, दिनेश बजाज, शांतिलाल जैन, सुल्तान सिंह, आर.के. प्रसाद, कुसुम खेमानी, राजकमल जौहरी, निर्भय मल्लिक, मंजूरानी सिंह, रुपा गुप्ता और जे.के. गोयल साधारण परिषद के साधारण सदस्य हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं समाज विकास ने पश्चिम बंगाल में हिन्दी अकादमी के गठन के लिये राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को धन्यवाद जताया है एवं विवेक गुप्ता को अकादमी का अध्यक्ष नियुक्त करने पर शुभकामनायें दी है।

मारवाड़ी सम्मेलन उच्च शिक्षा समिति

दो करोड़ का धन संग्रह

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की उच्च शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल ने गत १३ जुलाई को आयोजित बैठक में जानकारी दी कि आरम्भिक निर्धारित लक्ष्य के अनुसार दो करोड़ रुपये की धनराशि संग्रह कर ली गयी है। बैठक में जरुरतमंद एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिये स्कॉलरशिप देने सम्बन्धी दिशा-निर्देशों एवं नियमावली पर विस्तृत चर्चा हुई। सभी प्रादेशिक सम्मेलनों को इस सम्बन्ध में जानकारी देने का निर्णय लिया गया। कोष की राशि के लिये पांच करोड़ का नया लक्ष्य निर्धारित किया गया।

बैठक में सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व सम्पादक श्री सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार, महामंत्री श्री संतोष सराफ, श्री श्यामलाल डोकानिया आदि उपस्थित थे।

गीता और गाँधी का अन्तर; वह पथ है तो यह पथिक है।

प्रान्तीय समाचार

छत्तीसगढ़ी मारवाड़ी फेडरेशन

समाजसेवा में मारवाड़ियों का विशेष योगदान

– पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा

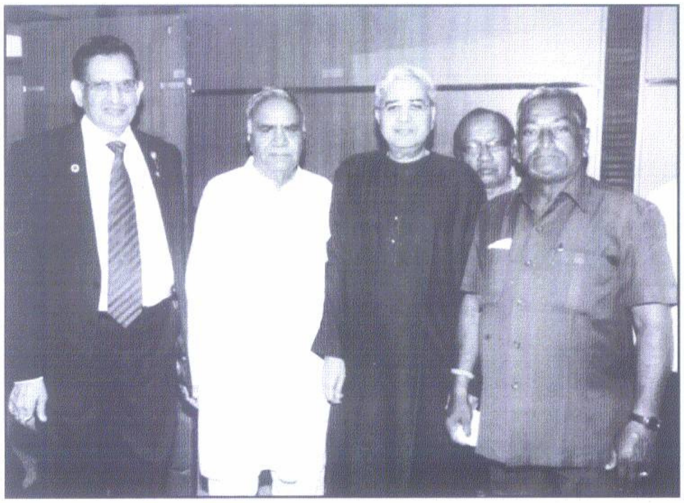

नई कमेटी

श्री रामानन्द अग्रवाल, अध्यक्ष
श्री लोकेश कावड़िया, उपाध्यक्ष
श्री इंदर चन्द्र धारीवाल, उपाध्यक्ष
श्रीमती अनिता खंडेलवाल, महिला प्रदेश प्रभारी

छत्तीसगढ़ी मारवाड़ी फेडरेशन की ओर से शनिवार, १६ जुलाई २०११ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा की विशेष उपस्थिति पर रायपुर के होटल बेबीलान में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि समाजसेवा के क्षेत्र में मारवाड़ियों का विशेष योगदान है। श्री शर्मा ने महिलाओं के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उन्हें पृष्ठभूमि पर आगे आने का आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद थे विदिशा के पूर्व विधायक श्री हृदय मोहन जैन एवं नाल्को (भुवनेश्वर) के चेयरमैन डॉ. एस के टामोटिया। इस अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच के नवनिर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष श्री रामानंद अग्रवाल, प्रदेश महिला अध्यक्षा श्रीमती अनिता खण्डेलवाल, श्री इंदरचन्द धारीवाल, श्री सनत जैन, श्री मगललाल अग्रवाल, डॉ. अरुण हरितवाल, श्री लोकेश कावड़िया, श्री मदन तालेड़ा, श्री आशीष गोंदिया, श्री भगवती अग्रवाल, श्री दीनू शर्मा, श्री सुरेन्द्र शुक्ला, श्री विनोद अग्रवाल, श्री पवन अग्रवाल, श्री रूप चंद शर्मा, सरिता जैन, जयश्री शर्मा, अमिता सिंघानिया, रचना अग्रवाल आदि कई लोग मौजूद थे।

परिचय

श्री रामानंद अग्रवाल

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, छत्तीसगढ़ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री रामानंद अग्रवाल का जन्म १६ मार्च १९३६ को लाहौर (अब पाकिस्तान में है) में हुआ। इनका सामाजिक जीवन राजनैतिक चेतना से प्रभावित रहा। सन् १९५२ से लेकर १९७५ तक श्री अग्रवाल जनसंघ के सक्रिय सदस्य थे। भारतीय मजदूर संघ से सन् १९६० से जुड़ाव है। कई सरकारी व गैरसरकारी संस्थानों के विशिष्ट पदों को सुशोभित करनेवाले श्री रामानंद अग्रवाल वर्तमान में छत्तीसगढ़ समाज कल्याण वोर्ड की राज्य कमिटी के कार्यकारिणी सदस्य है, साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य जनकल्याण परिषद् एवं कर्मचारी प्रोविडेंट फंड ऑर्गनाईजेशन के मनोनीत सदस्य। सन् २००६ में श्री अग्रवाल को इनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए ऑल इंडिया अग्रवाल सम्मेलन की ओर से प्रतिष्ठित "अग्र भूषण" सम्मान दिया गया।

प्रान्तीय समाचार

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं शिक्षा समिति का प्रतिभा सम्मान समारोह

बिहार प्रादेश्कि मारवाड़ी सम्मेलन एवं बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति के तत्वावधान में प्रतिभा सम्मान समारोह दिनांक १२ जून २०११ को बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स के साहू जैन हॉल में आयोजित किया गया।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा आयोजित मैट्रिक एवं १२ वीं की परीक्षा में ८५ एवं सी. बी. एस. सी. ई. तथा आई. सी. एस. ई. में ९० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करनेवाले समाज के ११२ मेधावी छात्र-छात्राओं को "शिक्षा गौरव सम्मान" प्रमाण-पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

समारोह का उद्घाटन वृंदावन के स्वामी अनन्ताचार्य जी ने दीप प्रज्जवलित कर किया। मुख्य अतिथि श्री राजमणि प्रसाद सिंह, (अध्यक्ष बिहार विद्यालय परीक्षा समिति) ने कहा कि ऐसे आयोजनों के द्वारा ही प्रदेश में शिक्षा की अलख जगायी जा सकती है। विशिष्ट अतिथि कैरियर काउन्सलर श्री आशीष आदर्श ने कहा कि दसवीं पास करने के बाद का समय छात्रों के लिए मूल्यवान होता है। इसी समय छात्रों को निर्णय लेना चाहिए कि भविष्य में क्या करना है। उद्घाटनकर्त्ता स्वामी अनन्ताचार्यजी ने छात्र-छात्राओं को वेद और विज्ञान के बीच संबंधों को बताकर एवं लक्ष्य का निर्धारण कर सतत प्रयत्नशील रहने के लिए कहा।

शिक्षा समिति के अध्यक्ष डा. चिरंजीव खण्डेलवाल ने कहा कि समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं को शिक्षा ग्रहण करने के लिए हमलोग ऋण छात्रवृत्ति देते हैं जो इन्टर, स्नातक, स्नातकोत्तर, इंजीनियरिंग एवं, मेडिकल की पढ़ाई के लिए सुलभ हैं, ताकि समाज का कोई भी छात्र अर्थ के अभाव में अशिक्षित न रहे।

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय कुमार किशोरपुरिया ने कहा कि मारवाड़ी समाज एक प्रबुद्ध समाज है और समाज की उभरती प्रतिभाएँ राष्ट्र की धरोहर।

श्री महेश जालान एवं श्रीमती सुषमा अग्रवाल ने संचालन किया। उक्त अवसर पर श्री रामपाल अग्रवाल नूतन, श्री विनोद गोयल, श्री विजय कुमार बुधिया, श्री निर्मल झुनझुनवाला, श्री प्रहलाद शर्मा आदि उपस्थित थे। सम्मेलन के महामंत्री श्री राजेश बजाज ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पद्मभूषण राजश्री बिड़ला का अभिनन्दन समारोह

माहेश्वरी समाज की गौरवशाली महिला श्रीमती राजश्री बिड़ला का उनकी जन-जन के उत्थान के लिए की गई अनुपम सोवाओं के लिए भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण अलंकरण से सम्मानित होने पर श्री आदित्य विक्रम बिड़ला मेमोरियल व्यापार सहयोग केन्द्र एवं तमिल नाड़ु, पाण्डीचेरी, केरला माहेश्वरी सभा द्वारा सर मूथा वेंकटसुब्बाराव कन्सर्ट हॉल, चेन्नई में आयोजित भव्य अभिनन्दन समारोह में आन्ध्र प्रादेशिक सभा के अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने परम्परागत ढंग से अभिनन्दन कर स्मृति चिह्न प्रदान किया। अभिनन्दन के उपरान्त आभार प्रदर्शित करते हुए श्रीमती राजश्री बिड़ला ने अपने उद्बोधन में कहा कि माहेश्वरी समाज की गणना एक चिंतनशील, सेवा, त्याग और सदाचार की भावना रखने वाले प्रबुद्ध समाज के रूप मे की जाती है। हमारे समाज मे भी ऐसे बन्धु है जो अर्थाभाव में अपना निजी व्यवसाय स्थापित करने या विकसित करने की चाहना रखते हुए भी असमर्थ है। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा की प्रेरणा पर उद्योग जगत की श्रेष्ठ विभूति, युवा शक्ति के प्रकाश पुंज स्व. आदित्य विक्रम बिड़ला के नाम पर स्थापित व्यापार सहयोग केन्द्र द्वारा ऐसे उद्यमशील बन्धुओं को स्वावलंबी बनाने में केन्द्र द्वारा सार्थक और सक्षम भूमिका निभाई जा रही है।

राजश्री बिड़ला को स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित करते सभा के पदाधिकारीगण।

अभिनन्दन समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित अ.भा. माहेश्वरी महासभा के अधय्क्ष रामपाल सोनी ने कहा कि श्रीमती राजश्री बिड़ला को प्राप्त पद्मभूषण सम्मान से न केवल बिड़ला परिवार अपितु सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज गौरवान्वित हुआ है।

प्रान्तीय समाचार

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की त्रैमासिक गतिविधियाँ

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के २७ वें प्रादेशिक अधिवेशन में श्री विजय कुमार किशोरपुरिया ने प्रादेशिक अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। तदोपरंत प्रादेशिक कार्यालय द्वारा निम्न कार्य हुए –

अप्रेल २०११ में डा. महादेव चाँद के अमेरिका में निधन पर दिनांक ०८ अप्रैल २०११ को संध्या बेला में बिहार प्रा. मा. सम्मेलन एवं महिला मंच के संयुक्त तत्वावधान में शोक सभा हुई। २१ अप्रैल को एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर देशवासियों से शादी विवाह के मौके पर खाद्य पदार्थों की बर्बादी रोकने का अनुरोध किया गया। साथ ही केन्द्र एवं राज्य सरकार से अनुरोध किया गया कि इसके लिए कानून बनाया जाए। कार्यकारिणी की बैठक में समवेत स्वर से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि बिहार राज्य को विशेष राज्य का दर्जा दिलाने हेतु एक सशक्त हस्ताक्षर अभियान चलाया जाये और उसे राज्य सरकार के माध्यम से केन्द्र के सम्मुख प्रस्तुत किया जाये। इस अवसर पर हस्ताक्षर अभियान हेतु मुद्रित प्रपत्र भी वितरित किए गए।

मई २०११ में दिनांक १५ को भागलपुर प्रमंडल की बैठक सम्पन्न हुई। श्री राहुल बजाज को फ्रांस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'लाड्र्स ऑफ नेशनल आर्डर ऑफ दी लीजन ऑफ ऑनर' से सम्मनित किए जाने पर एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बधाई दी गई।

पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी १२ जून २०११ को साहू जैन हॉल बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें ११७ छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष नन्द किशोर जालान के निधन पर दिनांक १६ जून २०११ को सम्मेलन सभाकक्ष में शोक सभा का आयोजन किया गया।

दिनांक २९ जून २०११ को हरियाणा के राज्यपाल महामहिम् जगन्नाथ पहाड़िया जी के आगमन पर सम्मेलन सभागार में सामाजिक समरसता गोष्ठी का आयोजन किया गया।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की गतिविधियां

महावीर सेवा सदन में ५० लोगों का विकलांग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें श्री रतन शाह, डा. तारा दुग्गड़, श्री प्रहलाद राय गोयनका, पश्चिम बंगाल की अध्यक्षा श्रीमती श्वेता टिबड़ेवाल, पूर्व प्रान्तीय अध्यक्षा श्रीमती विमला डोकानिया एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्षा श्रीमती शारदा लाखोटिया, कोलकाता शाखा की अध्यक्षा श्रीमती उर्मिला खेतान और अन्य सदस्याएं उपस्थित थी।

बंगाल में नयी शाखा का गठन रानीगंज में हुआ जिसमें श्रीमती मंजु गुप्ता को शाखा अध्यक्षा बनाया गया। इसमें कोलकाता शाखा की श्रीमती अंजली सुरेका का विशेष योगदान रहा।

प्रान्तीय समाचार

श्री सुरेन्द्र लाठ उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

अग्रसेन भवन, सम्बलपुर में आयोजित राज्य परिषद की बैठक में श्री सुरेन्द्र लाठ, पूर्व सांसद(राज्यसभा) पुनः सर्वसम्मति से उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, ओड़िशा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं ।

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित निर्वाचन समिति, जिसके अन्य सदस्य श्री मगनलाल अग्रवाल (Retd. Chief Engineer) एवं श्री मनसुख सेठिया ने पहली बार पूर्ण पारदर्शिता के साथ गणतांत्रिक पद्धति से चुनाव प्रक्रिया का संचालन किया । राज्य परिषद बैठक में प्रांत की ४० शाखाओं के २८ स्थानों से आए १५० प्रतिनिधियों के मध्य सर्वसम्मति से उनके निर्वाचन की घोषणा की गई । बैठक में पूर्व अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोठिया, श्री काशी प्रसाद झुनझुनवाला, श्री किसनलाल भरतिया एवं अन्यान्य गणमान्य प्रतिनिधि उपस्थित थे ।

प्रसंगवश

वहाँ सम्पादक क्या करेगा?

उन दिनों मैं कोलकाता में 'अणुव्रत' का सम्पादक था। साहू-परिवार से जुड़े एक साहित्यप्रेमी उद्योगपति मित्र ने एक दिन मेरे सम्मुख 'ज्ञानोदय' के सम्पादक पद का प्रस्ताव रखते हुए पूछा, 'आप तैयार हों, तो बात आगे बढ़ाऊँ?' मुझे तत्काल वह फॉर्म याद आ गया, जिसे मैंने ज्ञानपीठ के मंत्री श्री लक्ष्मी चंद जैन के पास देखा था। मैं किंचित मुसकराते हुए बोला, 'लेकिन भाईजी, उन्हें तो 'सम्पादक' नहीं एक 'आज्ञाकारी क्लर्क' चाहिए।' मित्र ने बड़े आश्चर्य से पूछा, 'यह आप क्या कह रहे हैं?'

मैंने उन्हें फिर विस्तार से बताया कि वहाँ जो रचनाएँ आती हैं, उनके साथ एक फॉर्म लगाया जाता है, जिस पर अन्य सब विवरण के बाद, नीचे क्रमशः चार पैनेल जैसे बने होते हैं, जिनमें खाली जगह छोड़कर क्रमशः छपा होता है -

१. उप सम्पादक का अभिमत
२. सह सम्पादक का अभिमत
३. सम्पादक का अभिमत और अंत में
४. अध्यक्षाजी का निर्णय

अब बताइये, वहाँ 'सम्पादक' क्या करेगा?

– सत्यनारायण मिश्र (बहाव की वापसी)

Amazing offer to all

Business Economics

Net Marketing. Be an Agent. Enroll at Rs. 500/-
Earn 25% commission or get following gift items:

Mobile Phone

5 Subscribers for 3 years

Desktop Computer

30 Subscribers for 3 years

Laptop Computer

40 Subscribers for 3 years

Digital Camera

10 Subscribers for 3 years

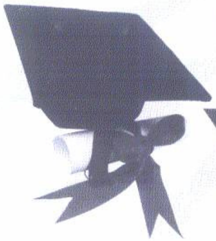

100 Subscribers for 3 years

Complementary MBA Course Rs, 85,000 from IISD

80 Subscribers for 3 years

Complementary BBA/BCA Course Rs. 75,000 from IISD

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. ____

Address : ____

____ City/District: ____

State: ____ Country: ____ Pin Code : ____

E-mail : ____ Mobile : ____ Landline : ____ STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ____ dated: ____ for Rs. ____ drawn on: ____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: ____ date: ____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

गीत

माणखो

माणखो मत छोडै रे मिणख, माणखो गयां रहवैगो के?
जमानो बित्यो जावै है, पाछलो लोग कहवैगो के?
टूंठ बागीचै फलर्या है, आम मं अमराई कोनी।
सुहागण चूड़ी झणकारै, मांग मं गरमाई कोनी।
बावड्यां भर ज्यावै क्यांसै, बादलां पाणी ही कोनी।
बूंद नैणां स्यूं क्यूं झररी, सुहागन जाणी ही कोनी।
भेष रो मोल नहीं होवै, मोल तो मिणख-जमारै रो।
मिणख रो मोल नहीं होवै, मोल क्यूं आज कंवारै रो।
पागड़ी तो माथा स्यूं गमी, नाड़ पण ऊंची तो राखो।
कमी कपड़े रे कोनी है, लाज नै ढ़ांपी तो राखो।
यो पूरब पच्छिम कोनी है, आबरु बिकै अठै कोनी।
विधाता लेख लिख दियो है, लेख यो मिटै अठै कोनी।
कूपलां काची मत तोड़ो, बेल कांटा री रह जासी।
नाम बड़कां रो डुबैगो, जगत् में निंदरा रह जासी।
द्रव्य री दारु पी पीकै, मिणख मत मिणखाचारो खो।
टीबड़ा री बालू बोले, नहीं यो उणियारो थारो हो।
गांव रे भाईचारे न छोड़ के नाम कमायो है।
प्रेम रो धन असली धन है, आज क्यूं मूल गंवायो है।
रुप री भग नहीं होवै, नैण रा नक्स नहीं ढ़लकै
मिणख मं खुणस नहीं होवै तो मिणख रो ढंग नही रलकै।

जगदीश प्रसाद पाटोदिया "चांद"
हावडा

आपके विचार

"समाज विकास" अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र है जो गत ६१ वर्षों से कोलकाता से प्रकाशित किया जा रहा हैं।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। समाज के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न पहलुओ पर "समाज विकास" के माध्यम से चर्चा आयोजित की जाती है।

समाज सुधार एवं समरसता के अन्तर्गत देहज-दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, अर्न्तजातीय विवाह, वृद्धाश्रम क्यों, आदि विषयों पर विचार-विवेचना "समाज सुधार" के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता है।

आपके विचारों को प्रकाशित कर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
एवं
सम्पादक, समाज विकास

समरसता का उदाहरण

हम दूध में शक्कर की तरह रहेंगे

अगर हम विवेक का आश्रय लेकर विचार करें तो यह तथ्य हमारे सामने आयेगा कि मनुष्य-मनुष्य के बीच जितने भी झगड़े हैं, उनका कारण केवल अज्ञान है। अज्ञान के कारण ही व्यक्ति भेद-भाव का शिकार हो जाता है। ज्ञान का उद्घोष है कि सब मनुष्य समान हैं। सबको अपने विचारानुसार जीने का अधिकार है। किसी को यह अधिकार नहीं कि वह दूसरों के धर्म के बारे में, उनकी जीवन-शैली के बारे में घृणा पैदा करने वाली टिप्पणी करे।

प्रत्येक आदमी अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक जीना जाहता है, लेकिन अज्ञानी का एक ही अनुचित कदम अनेक घरों की दुर्दशा का कारण बन जाता है। किसी भी आक्षेप की प्रतिक्रिया ऐसी होती है कि लोग अपना संतुलन खो देते हैं और अनेक घरों के दीपक बुझ जाते हैं। थोड़े दिनों बाद स्थिति पुनः शान्त हो जाती है, किन्तु जिनके दिलों पर घाव लगे हैं, वे कभी सुख नहीं पाते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने दिमाग का संतुलन किसी भी हालत में न बिगड़ने दें और जो कुछ भी करें, खूब अच्छी तरह विचार कर करें।

उस समय गुजरात में जाघव राणा का राज्य था। उनके दरबार में पारसी शरणार्थियों का एक प्रतिनिधि उपस्थित हुआ। राणा ने उससे आने का कारण पूछा। प्रतिनिधि ने, जो शरणार्थियों में सबसे व्योवृद्ध था, कहा–महाराज! हम आपके राज्य में रहकर पूजा की स्वतंत्रता चाहते हैं। अपनी परम्पराओं और रीति-रिवाजों के अनुसार अपने बच्चों को पालने का अधिकार चाहते हैं। आप हमें हमारी आवश्यकतदानुसार जमीन देने की कृपा करें, जिस पर खेती कर हम अपना पेट भर सकें।

राजा ने कहा – आप जो चाहते हैं, वह आपको मिलेगा, किन्तु बदले में आप देश को क्या देंगे?

पारसियों के प्रतिनिधि ने एक खाली गिलास मंगवाया। उसने उसमें दूध भरा और शक्कर मिलाकर बोला – महाराज! देखिये, दूध में कहीं शक्कर नजर आ रही है? जैसे यह शक्कर दूध में मिल गयी है, ठीक इसी तरह हम भी आपकी मानवीय करुणा-रूपी दूध में न दिखायी देने वालपी शक्कर की तरह आपके राज्य में रहेंगे और जन-जीवन में मिठास प्रवाहित करते रहेंगे।

एक दोहे की करामात

शेख रंगरेजिन हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री थी। कहते हैं कि यशस्वी कवि आलम ने उन्हें अपनी पगड़ी रँगने को दी, जिसके एक सिरे में भूल से दोहे की चिट बँधी चली गयी। उसकी आधी पंक्ति थी –

कनक छुरी-सी कामिनी काहे को कटि छीन।

इसकी दूसरी पंक्ति लिखने को रह गयी थी। शेख ने तत्काल दोहे को पूरा किया –

कटि को कंचन काटि बिधि कुचन मध्य धरि दीन।

और चिट को उसी तरह खूँट में बाँध कर पगड़ी वापस कर दी। इस पर आलम शेख पर इतने आसक्त हो गये कि बाद में दोनों विवाह-सूत्र में बँधकर ही रहे।

– गंगा प्रसाद पाण्डेय (ब्रह्मपीयूष)

क्या ढूँढ रहे हैं?

एक दार्शनिक भरी दोपहर में लालटेन हाथ में लिये जा रहा था। किसी ने पूछा, 'लालटेन लेकर क्या ढूँढ रहे हैं?' दार्शनिक ने कहा - 'इन्सान'। लोगों ने कहा, 'तो हम इन्सान नहीं हैं?' दार्शनिक ने शान्ति से कहा, 'तुम लोगों में से कोई डॉक्टर है, कोई व्यापारी है, कोई शिक्षक है, कोई वकील है, पर कई इन्सान नहीं। इन्सान तो उसे कहते हैं जो सबसे प्रेम करे, सबके दुख-दर्द में काम आ सके और सबको समान माने।

– केशुभाई देसाई (धर्मयुद्ध)

समाज विकास में वर-वधू परिचय

आपकी पत्रिका 'समाज विकास' ने एक नये 'वर-वधू परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत वैवाहिक सम्बंधों हेतु संक्षिप्त वर-वधू परिचय का निःशुल्क प्रकाशन आरम्भ किया है।

इच्छुक अभिभावकों से अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्री का नाम, शिक्षा, उम्र, जाति, गौत्र, कद, रंग आदि विवरण सम्पादक, समाज विकास, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७, फोन व फैक्स ०३३-२२६८ ०३१९ के नाम आमंत्रित है।

नाम - **संदीप गोयनका (३५ वर्ष)**
पिता का नाम - श्री राधेश्याम गोयनका
शिक्षा - स्नातक (वाणिज्य)
जाति - मारवाड़ी
गौत्र - गोयल
कद - ५' ७", रंग - सांवला
पैतृक स्थान - चुरु, राजस्थान
निवास - एई १२२, रवीन्द्र पल्ली, केष्टोपुर, कोलकाता - १०१

नाम - **धीरेन्द्र कुमार अग्रवाल (३० वर्ष)**
पिता का नाम - श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल
शिक्षा - उच्च माध्यमिक
जाति - मारवाड़ी
गौत्र - गोयल
कद - ५' १०", रंग - साफ
निवास - रेलवे मार्केट, आद्रा, पुरुलिया, प. बंगाल

नाम - **विजय कमार अग्रवाल (३० वर्ष)**
पिता का नाम - श्री हरिराम अग्रवाल
शिक्षा - स्नातक (वाणिज्य), एमबीए (मार्केटिंग)
जाति - मारवाड़ी, गौत्र - गर्ग
कद - ५' ५"
निवास - नौगाँव (आसाम)

नाम - **नीरज कुमार शर्मा (३० वर्ष)**
पिता का नाम - श्री राम प्रताप शर्मा
शिक्षा - उच्च माध्यमिक, आईटीआई (इलेक्ट्रीक)
गौत्र - भारद्वाज
कद - ५ ८
पैतृक स्थान - चुरु, राजस्थान
निवास - एम/६४, गोपाबंधुकार, धेंद कॉलोनी राउरकेला (उड़िसा)

गांधी जी की अंतिम यात्रा और लोहिया जी

गांधी जी की अंतिम यात्रा के समय उनके शव को सैनिक गाड़ी पर लिटाया गया था और कुछ अन्य स्वजन वहां बैठे थे। लोहिया जी इससे बहुत बेचैन और दुखी हुए थे कि अहिंसा के पुजारी का यह कैसा सम्मान। अंतिम यात्रा में शामिल लोगों को नंगे सिर, नंगे पांव पैदल ही शव यात्रा में शामिल होना चाहिए था। लेकिन सभी मोटरों में बैठे थे। लोहिया जी भी मोटर में ही थे लेकिन जब उन्होंने जवाहरलाल नेहरु को जूते पहने ही शव वाहन पर चढ़ते देखा तो मोटर से उतरकर उन्हें पकड़ कर नीचे उतारा और डांट पिलाई। दुख तो उन्हें हुआ ही।

हंसगुल्ले

निर्माता –

जो पुल बनायेंगे, वे अनिवार्यतः पीछे रह जायेंगे,
सेनाएँ हो जायेंगी पार, मारे जायेंगे रावण,
जयी होंगे राम,
जो निर्माता रहे, इतिहास में वे बंदर कहायेंगे

– अज्ञेय

कपड़े का व्यापारी सो रहा था। उसने सपने में देखा कि एक ग्राहक कपड़ा मांग रहा है और वह नाप रहा है। अनायास नींद में उसका हाथ चादर पर पड़ गया। वह उसे फाड़ने लगा। यह देखकर उसकी पत्नी चिल्लाई – यह क्या कर रहे हो? व्यापारी नींद में ही चिल्लाया–कमबख्त दुकान में भी मेरा पीछा नहीं छोड़ती।

☺ ☺ ☺

एक आदमी के घर चोरी हो गई। सहानुभूति प्रकट करने एक सज्जन आये, जिन्होंने बड़े आत्मीय ढंग से उन्हें एक कोने में ले जाकर कहा – भाई जान! मैं बताऊं चोरी किसने की है।

आदमी ने उत्सुकता से पूछा – किसने की है?

सज्जन बोले – देखो मेरा नाम नहीं आना चाहिए।

आदमी ने अधीरता से पूछा – आप चोर का नाम बताइये।

सज्जन ने पहले तो टालमटोल की और फिर उस आदमी को आहिस्ता से उसके कान में बताया... चोरी किसी चोर ने की है।

☺ ☺ ☺ ☺

एक शराबी एयरपोर्ट के बाहर खड़ा था, एक वर्दीधारी युवक उधर से गुजरा।

शराबी बोला – अबे एक टैक्सी ले आ। अन्धे हो क्या? युवक क्रोधित स्वर में बोला – मैं पायलट हूं टैक्सी ड्राइवर नहीं।

तो नाराज क्यों होता है यार, एक हवाई जहाज ही ले आओ – शराबी बोला।

☺ ☺ ☺ ☺

चोर की सजा पूरी हो रही थी और अगले दिन वह रिहा होने वाला था। उसके एक साथी ने पूछा – जेल से निकलते ही पहला काम तुम क्या करोगे? चोर ने जवाब दिया – एक टार्च खरीदूंगा, क्योंकि पिछली मर्तबा मैंने अंधेरे में बिजली की बजाय रेडियों का बटन दबा दिया था।

☺ ☺ ☺

विनोद ने पंकज से पूछा – पंकज तुम यह कैसे साबित कर सकते हो कि जानवरों की आंखें मनुष्य से ज्यादा तेज होती हैं?

पंकज ने जवाब दिया – क्या तुमने कभी किसी जानवर को चश्मा लगाते हुए देखा है।

☺ ☺ ☺

एक सज्जन बहुत उदास से अपने घर के बाहर कुर्सी पर बैठे थे। उनका मुंह लटका हुआ था, चेहरे पर मुर्दानगी छाई हुई थी। उधर से गुजरने वाले एक सज्जन से न रहा गया, आखिर में उन्होंने पूछ ही लिया... क्या बात है भाई साहब, आप इतने उदास क्यों है?

पहले सज्जन बोले – पहले घी दस रुपए किलो बिकता था पर आज तो आठ रुपए किलो ही बिक रहा है।

दूसरे सज्जन – यह तो अच्छी बात है। हमें तो खुश होना चाहिए।

पहले सज्जन – पहले दस रुपये बचा लेता था और अब आठ ही बचेंगे।

☺ ☺ ☺ ☺

डाक्टर – यहां आने के बाद मेरा धन्धा बिल्कुल ठप्प सा हो गया है।

दोस्त – इसका कारण है सीढ़ियों पर लगी हुई पट्टिका।

डाक्टर – यानी?

दोस्त – पट्टी में लिखा है – सीधे ऊपर जाने का रास्ता।

SMS की दुनिया

देश-दुनिया-समाज के घटनाक्रमों पर बेहतरीन समाज की उपज का जायका आपको घर बैठे SMS पर मिलता है। कुछ को आप तुरन्त Delete करते है तो कुछ को मित्रो को Forward करते है। SMS बन गया है अपने अच्छे-बुरे दिलचस्प विचारों को सीधे आपके पास पहुंचाने का नायाब तरीका।

SMS की दुनिया में हम पाठको से मजेदार, जायकेदार, तेज-तर्रार SMS समाज विकास को Forward करने के लिये आमंत्रित करते है जिन्हें हम Sender के नाम के साथ प्रकाशित करना चाहेंगे।

– सम्पादक, समाज विकास

We can always loose SOMETHING for SOMEONE but we should not lose someone for something, because life can return something but not SOMEONE.

There is nothing wrong with people possessing money. The wrong comes when money possesses you.

मिला हो सब कुछ तो फरियाद क्या करें
दिल हो परेशान तो ज़जबात क्या करे
आप सोचते होंगे आज याद नहीं किया
भूले ही नहीं आपको तो याद क्या करें।

वाह इण्डिया वाह!
अफजल को माफी
रामदेव को जेल
आ.एस.एस पर प्रतिबन्ध
सभी से अनुबन्ध
अमरनाथ पे लगान
हज के लिये अनुदान
बाकई, मेरा भारत महान।

Don't think you are NOTHING
Don't think you are EVERYTHING
Don't think you are SOMETHING
Who can achieve ANYTHING.

राजस्थान में मिला सरस्वती नदी का मीठा जल

– सुनील चौधरी

लुप्त हो चुकी पौराणिक सरस्वती नदी की खोज में जुटे तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ओएनजीसी) को शुरुआती दौर में ही अच्छी सफलता मिली है। जैसलमेर के निकट सरस्वती नदी के पुरातन मार्ग पर सामान्य नलकूप की अपेक्षा अधिक गहराई तक खोदे गए नलकूप में भारी मात्रा में मिले मीठे पानी से उत्साहित कंपनी अब इसी क्षेत्र में एक और नलकूप खोदने जा रही है।

जैसलमेर-बाड़मेर रोड पर सामान्य नलकूप की अपेक्षा अधिक गहराई तक नलकूप खोदा गया। इसमें अस्सी से १२० मीटर तक प्रचुर मात्रा में मीठा पानी है। इससे अधिक गहराई (तीन सौ से चार सौ मीटर) पर खारा पानी है। इसके बाद वापस ४५५ मीटर की गहराई पर मीठे पानी का भंडार मिला। कंपनी ने साढ़े पांच सौ मीटर तक खुदाई की। छह सौ मीटर तक यह पानी है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह पहला अवसर है जब देश में इतनी अधिक गहराई पर मीठे पानी का भंडार मिला है। यह स्थान सरस्वती नदी के पुराने मार्ग पर स्थित है। इस कारण यहां पर अधिक गहराई में पानी मिलने को वैज्ञानिक भूमिगत हुई सरस्वती नदी का पानी मान रहे है।

ओएनजीसी सूत्रों ने बताया कि इस नलकूप से ९० हजार लीटर पानी प्रति घंटा निकाला जा सकेगा। कंपनी इस पानी का परीक्षण करा रही है कि यह कितने साल पुराना है। इस नलकूप के पास अन्य सुविधाएं विकसित कर इसे प्रशासन को सौंप दिया जाएगा। सैन्य अभ्यास के दिनों में सेना इसका उपयोग करेगी। शेष समय आम लोगों को इससे जलापूर्ति की जाएगी। उल्लेखनीय है कि सरस्वती नदी के मार्ग पर बीस नलकूप खोदने की योजना ओएनजीसी की है।

पुस्तक समीक्षा

वह कौन थी?

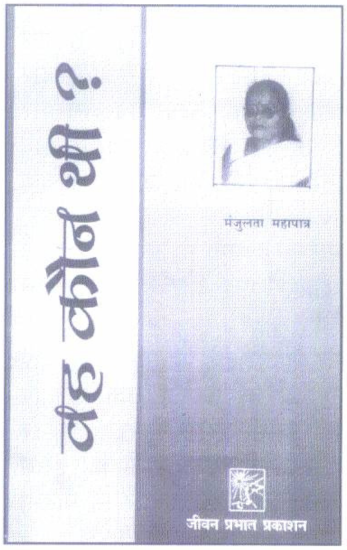

उड़िया लेखिका मंजुलता महापात्र की लंबी हिन्दी कहानी 'वह कौन थी' में लेखिका ने उम्र के साथ गहराते आपनी रिश्तों की पहचान कराने की कोशिश की है। साथ ही पति-पत्नी के बीच स्थापित संबंधों को समझाने का प्रयास किया है। लेखिका पारिवारिक समस्याओं से सभी प्रकार परिचित है और यहीं वजह है कि कहानी में पति पत्नी के माधुर्य संबंधों में आए आपनी तनाव के कारणों को भी उजागर किया है।

लंबी कहानी 'वह कौन थी' में लेखिका ने बड़े ही सुन्दर, सहज व सरल शब्द समीकरण के माध्यम से रथयात्रा को आगे बढ़ायी है। यहा भावनाओं में बहस का औचित्य नहीं और न ही भौतिक तत्वों को हासिल करने की चेष्टा। स्त्री पुरुष के आवचेतना की व्याख्या की गयी है। कहानी पथरीली जमीन का संकेत-बोध कराती हैं। लेकिन भाषाओं ने गड़बड़िया (प्रिंटिंग मिस्टेक) खली। कुल मिलाकर, समानान्तर धरातल पर लिखी एक अंतरंग कहानी का दर्जा दिया था सकता है चर्चित लेखिका मंजुलता महापात्र की कहानी 'वह कौन थी' को।

– **अनंतशिव**

पुस्तक : **"वह कौन थी?"**
लेखिका : मंजुलता महापात्र
प्रकाशक : जीवन प्रभात प्रकाशन
ए-२०१, साई श्रद्धा, वीरा देसाई रोड
मुंबई - ४०००५८
मूल्य : २५ रुपए मात्र, पृष्ठ - २४

पुस्तक समीक्षा

डॉ. केवलकृष्ण पाठक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

'केवलकृष्ण पाठक : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पुस्तक से हार्दिक सन्तुष्टी हुई कि रवीन्द्र ज्योति रूपी नीड़ का निर्माण लगभग चार दशकों से परमार्थ हित-साहित्य-संचयन किया गया। डॉ. केवल-कृष्ण पाठक द्वारा रचित साहित्य का जो बीज प्रत्यक्ष रूप से बिंबित होता है वह लेखक के सम्पूर्ण-व्यक्तित्व की झलक दिखाता है। समीक्षा-ग्रंथ आदि अध्यायों में विभाजित है – जीवन-वृतांत, जीवन तेरे कितने रंग, समीक्षायान, मन की पीड़ा, अप्रकाशित कृतियाँ, रवीन्द्र ज्योति-अभिमत, पत्रावली, काव्यांजलि एवं चित्रावली।

रवीन्द्र ज्योति के सम्पादक होने के साथ-साथ, साहित्य के क्षेत्र में अनेक विद्वानों से जुड़े हुए, बहु-पक्षीय प्रतिभा के धनी डॉ. केवल कृष्ण पाठक की दीर्घ साधना का मूल्यांकन करने हेतु प्रस्तुत पुस्तक पर्याप्त नहीं हैं। लेखक की आस्था, कर्मनिष्ठा, मानवीय भावनाओं, मूल्यों एवं आदर्शों, सामाजिक कुरीतियों के अभिशाप, विषमता आदि को प्रकट करता है।

प्रत्येक अध्याय से पूर्व सम्पादक रामफलसिंह खटकड़ द्वारा दिए गए काव्यात्मक विचार, लेखक के प्रति उनके मनोभावों को प्रकट करने का अत्यंत हृदयस्पर्शी प्रयास है।

– **डॉ. मधुबाला**

पुस्तक : **केवलकृष्ण पाठकः व्यक्तित्व-कृतित्व**
सम्पादक : रामफल सिंह खटकड़
प्रकाशक : रवीन्द्र ज्योति साहित्य मंच ३४३-१९
आनंद निवास, गीता कालोनी,
जीन्द-१२६१०२ (हरियाणा)
पृष्ठ : १२८, मूल्य : २०० रूपये

गीत

रंगीलो प्यारो राजस्थान

म्है के दुनिया कै रैई, अैं री कीर्ति अनन्त।
अैं धरती री पिछाण है, सती, सूरमा, सन्त।१।

अग्नि परीक्षा मै या धरती, सद्‌दाँ खरी उतरी है।
आण-बाण पै मर मिटणै री, परम्परा निखरी है।
पीठ कदे नईं दुश्मन देखी, ऐंबाल्की दुर्धर्ष।
याद कर रयो है श्रद्धा सै, इब ताँई भारतवर्ष
इब ताँई रोयाँ (रोबाँ) खड्या करै है, केसरियो परिधाण।
रंगीलो प्यारो राजस्थाण, रंगीलो प्यारो राजस्थाण।२।

बाप्पा रावल रो रण ताँडव, कुम्भ री असि धार।
जिणा रै विकट वैग सै दुश्मण पायो कोनी पार।
उरैई-उरैई हाड़ी राणी, करयो मूँड रो दाण।
इतीहास मै कोनी मिल्लै, ढूँढ़या उपमाण।
बीको, जैसल, कोटो, बूँदी सैंरी न्यारी सैं पिछाण।
रंगीलो प्यारो राजस्थाण, रंगीलो प्यारो राजस्थाण।३।

अस्सी धावाँ री कहाणियाँ, गूँज रैई घर-घर मै।
काँप उठ्यो थो आसमाण, सुनकै साँगा रै भैरव स्वर नै।
कण-कण में बलिदाण और भू अम्बर मै ललकार।
कमजोरी नै भसम कर रिया सतियाँ रै जौहर रा अंगार।
इणै खातर गरब कर रियो, सगलो हिन्दुस्ताण
रंगीलो प्यारो राजस्थाण, रंगीलो प्यारो राजस्थाण।४।

जिणकै सिरफ इशाराँ सै, भू-अम्बर नाच रिया है।
श्रृंग ब्रह्मगिरी रै बेदाँ मै, ईब ताँई बाँच रैया है।
पणघट रो कँवारो दरद, पीड़ सदा उपजावै।
छूटी कोणी मैंदी पण, बीदाँ नै रण रा साज सजावै।
नाचै भक्तिमयी मोरा रै, सागे कृष्ण भगवान।
रंगीलो प्यारो राजस्थाण, रंगीलो प्यारो राजस्थाण।५।

सिद्ध, महासँता, कवियाँ सै, पोषित याई धरा है।
भामाशाहाँ री ई धरती री अद्‌भूत परम्परा है।
बूजो भारत रै पाणी नै, अरावली बोलैगो।
खूण भरी बालू रो कण-कण, इतिहास खुदी खोलैगो।
मतवाला री सिंह धरा, यो कहवै है हिमवान।
रंगीलो प्यारो राजस्थाण, रंगीलो प्यारो राजस्थाण।६।

अनुवादक : श्रीमती स्वाति देवी चूड़ीवाल
आरा (बिहार)

(प्रस्तुत कविता समाज विकास के जनवरी २०११ के अंक में प्रकाशित कवि श्री अरुण प्रकाश अवस्थी की हिन्दी कविता "रंगीला प्यारा राजस्थान" का मारवाड़ी अनुवाद है।)

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

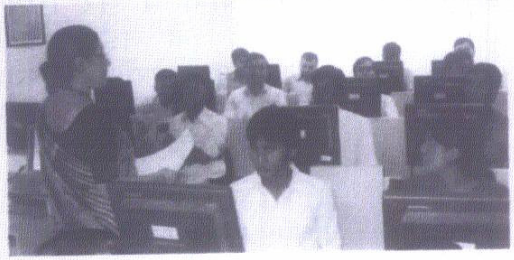

Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000

3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000

2 Yrs. **MBA + PGPM** ₹ 85,000

Complimentary Courses

- Spoken English
- Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Company Secretaryship • Advocateship • E-Tuition
- Montessori Teacher Training (One Year Diploma)
- Diploma in Banking and Finance

SPECIAL COURSES

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Master of Business Administration (MBA)
- 2 Year Post-Graduate Course

Bachelor of Business Administration (BBA)
- 3 Year Graduate Course

Bachelor of Computer Application (BCA)
- 3 Year Graduate Course

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA
- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA
- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

Degree approved by UGC–AICTE–DEC, Ministry of HRD, Govt. of India

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in • Website : www.iisdedu.in

कहानी

भूत

– शिव सारदा

रात्रि का दूसरा प्रहर बीत चुका। सुनसान जंगलों के बीच से एक सौ चालीस की स्पीड में तेजी से भाग रही थी राजधानी। मुगलसराय स्टेशन पार हो चुका है। मैंने खिड़की बंद कर दी। बत्तियां भी बुझा दी। फिर बीच वाले बर्थ पर लेट गया किंतु आँखों में नींद न थी। नींद न आने का कोई कारण भी नहीं था। मैंनें तकिये के नीचे से सिगरेट का पॉकेट निकाला और उठ बैठा। बैठने में तकलीफ हो रही थी। वैसे भी मिडिल बर्थ में बैठने की गुंजाईश नहीं रहती। सिर्फ सोया जा सकता है। मैं सीट से नीचे उतरा और दरवाजे के पास बनी बालकानी में आ गया। ट्रेन अभी भी द्रुतगति से भाग रही थी। मैं शीशे के सामने खड़ा हो गया। सिगरेट मुँह से लगी थी। मैंनें नाक से धुऑं छोड़ा और पुनः एक लम्बा कश मारा। अहा! कितनी शांति मिल रही है। अचानक पीछे से एक आदमी आया। उसने कंबल मुँह तक लपेट रखी थी। मुझे लगा शायद नींद में ही उठ चला आया है। वो सीधे टॉयलेट में घुस गया। सिगरेट आधी से ज्यादा जल चुकी थी। मैंनें खींच कर लम्बे दो कश और मारे, फिर फर्श पर फेंक चप्पल से रगड़ दिया। सिगरेट बुझ गयी। फर्श पर एक काला धब्बा चमक उठा।

जो व्यक्ति टॉयलेट में घुसा था अभी तक निकला नहीं था। मैंनें सोचा, काफी देर हो चुकी है कहीं भीतर हार्ट फेल तो नहीं हो गया? ऐसे किस्से कई बार सुने थे। मैंनें दरवाजे को हल्के से धक्का दिया। दरवाजा पूरी तरह से खुल गया। लेकिन, अरे! यह क्या? भीतर कोई न था! तो फिर वो कहाँ गया? वो! कौन वो? सर से पाँव तक एक सिहरन-सी दौड़ गयी। कौन था वो? किताबों में पढ़ा एक ख्याल पुनः दिमाग में उभर आया। फिर सिहर उठा बदन।

भूत! हाँ, भूत!! मैं कांप गया। उल्टे पैर दौड़ कर अपनी बर्थ पर जा चढ़ा, चादर निकाली और मुंह तक ढक सोने की कोशिश करने लगा। क्या मैंनें कोई सपना देखा है? नहीं।

अचानक एक आवाज आयी–भाई, भाई साहेब... अजी, सुनते हैं...। मैंनें आहिस्ते से चादर से मुँह निकाल कर देखा। शायद कोई मुझसे ही मुखातिब था। मैंनें पूछा – "क्या है, माचिस चाहिए?" उसने कहा – "नहीं, मुझे सिर्फ एक सिगरेट चाहिये।"

मैनें उसे गौर से देखा – अरे, यह तो वहीं शख्स है जो अभी कुछ देर पहले टॉयलेट के भीतर जाकर गायब हो गया था। मेरे माथे पर पसीना छलक आया। फिर भी मैनें हिम्मत कर कहा – हॉ, है और सिगरेट की डिब्बी निकाल उसकी ओर बढ़ा दी। उसने एक सिगरेट निकाली और सामने की एक खाली सीट पर बैठ गया। उसने बाहर अंधेरे आसमान की ओर टकटकी लगा रखी दी। सिगरेट उसकी अंगुलियों के बीच फंसी धुआं फेंक रही थी। मुझे लगा शायद उसकी अंगुलियां जल जाएगी। मैं चिल्लाया – ओ भाई, सिगरेट संभाल के....। किंतु उसने कुछ सुना नहीं। मैं बर्थ से नीचे उतरा। देखा – वो खुली आँखों से आसमान ताक रहा था। अरे, यह क्या? मैं चौंक गया। इसके तो आँखें ही नहीं है। आँखों की जगह दो भयानक गड्ढे बने थे। मैं भय से कांप कर टॉयलेट की ओर दौड़ा। यह क्या? घटना पुनः चौंका देनेवाली थी।

धंसी आँखों वाला वो आदमी मुँह से सिगरेट लगाए पहले से ही टॉयलेट के बाहर खड़ा था। मुझे देख कर उसने कहा – आपकी माचिस! मैं हाथ बढ़ाकर माचिस ले लेता हूँ। किंतु इससे पूर्व कि शुक्रिया कहूँ, वो गायब हो चुका था। वो टॉयलेट में नहीं था। बाहर की सीट पर भी नहीं था। फिर कहाँ गया वो? बदन एक बार फिर से सिहर उठा। भूत! मैं पुनः कांप गया। मैं बेहद डर गया था। पुनः चादर से मुँह ढांप कर अपनी बर्थ पर लेट गया। मुझे लगा जैसे फिर से कोई मेरी चादर खींच रहा है – भाई साहब...। इस बार मैं चादर से मुँह नहीं निकालता हूँ। चुपचाप लेटा हूँ।

भयकंपित! भूत का भय!!

मेरी चादर खिंची चली जा रही है। मैं फिर भी चुप लेटा हूँ। एकदम चुप।

सुबह हो चुकी है। चाय वाले की आवाज कानों में रेंग रही है। मैं आहिस्ते से आँखें खोलता हूँ। चाय का एक प्याला मार कर टॉयलेट की ओर बढ़ता हूँ। लेकिन नहीं, पुनः लौट आता हूँ। आँखों में अभी भी एक भूत बैठा है!

लघु कथा

नफा-नुकसान

– डा. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी
नैनीताल (उत्तराखण्ड)

पं. किशोरी लाल एक सफल व्यवसायी भी थे, व्यापार की व्यवस्था के चलते अपनी इकलौती संतान पुत्र 'गोलू' का विवाह भी देर से कर पाये। बड़े घर की बहू ने आते ही अपना रंग-ढंग दिखाना शुरु कर दिया। शादी के पहले ही दिन से बहू की अपनी सास से बिल्कुल नहीं बनी। सुबह ११ बजे तक उठना, बिना नहाये चाय नाश्ता करना, रसोई के काम में अपनी सास का हाथ ना के बराबर ना बंटाना, यही रोज की दिनचर्या थी। पूरे दिन अपने कमरे में रहते हुए टीवी देखना, मोबाइल से मायके एवं अपनी सहेलियों से बतियाना ही रोजाना जीवन का एक हिस्सा बन चुका था।

सासू मां यदि कभी रसोई में थोड़ा बहुत हाथ बंटाने को कह देती है तो बहुरानी का चेहरा सूज जाता और वो गोलू के आते ही उल्टे सीधे कान भर देती कि मैं रोज-रोज की मां की चिकचिक से परेशान हूं, अपनी रसोई अलग करवा लो। रोजाना की चिकचिक सुनते हुए आखिर एक दिन गोलू ने हिम्मत कर अपनी मां से कह ही दिया कि मां घर में शांति बनाये रखने के लिए हम और आप अपनी-अपनी रसोई अलग-अलग कर लेते हैं, गोलू की यह बात सुनकर मां को जोर का झटका लगा किन्तु उन्होंने धीरे से संभलते हुए कहा कि यदि तुम्हें इस हवेली में ही अपनी रसोई को अलग करना है तो यह कदाचित संभव नहीं होगा, यदि तुम्हें अलग रहने का मन ही है तो तुम अपने लिये अलग से किराये का एक मकान ढूंढ लो। वहां रहो, कुछ भी खाओ-पिओ मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी, क्योंकि यदि तुम इस हवेली में मेरी आंखों के सामने रहोगे और मैं तुम्हारे बाबूजी को बढ़िया-बढ़िया भोजन बनाकर खिलाऊंगी और दूसरी और तुम्हारी बहू तुम्हें ढंग से खाना नहीं खिलाऐगी तो एक मां होने के नाते मुझे अपने सामने यह बर्दाश्त नहीं होगा कि मैं और तुम्हारे बाबूजी भरपेट भोजन करें और हमारा बेटा भूखा या अधूरा भोजन कर सो जाय। इतना ही नहीं यदि मैं दो सब्जी बनाकर खाऊं और तुम्हारे बाबूजी को खिलाऊं, जबकि तुम्हारी रसोई में हमारे सामने ही विभिन्न व्यंजन बनें या तुम अपनी बहुरानी के दिशा निर्देश पर बाजार से विभिन्न व्यंजन लाओ तो भी हम दोनों को बुरा ही लगेगा। इसलिए यदि तुम्हारा अलग होने का मन ही है तो अपने लिए अलग से किराये का मकान लेकर रहने पर विचार करना, मेरी इस हवेली में एक साथ दो रसोई, एक म्यांन में दो तलवार की भांति नहीं रह सकती। अपनी मां के मुंह से दो टूक उत्तर सुनकर 'गोलू' चुपचाप ठगा सा रहा गया और आहिस्ता-आहिस्ता अपनी बहू से मां के बताये दिशा-निर्देश के नफे-नुकसान का हिसाब लगाने बेडरूम की ओर बढ़ता चला गया।

मैं तुम्हें तैयार मिलूँगा!

गुरुदेव रवीन्द्र कुछ लिख रहे थे। एकाएक एक अपरिचित व्यक्ति सामने आ खड़ा हुआ। बोला, 'मैं तुम्हारा वध करने आया हूँ।'

'तो करो! परन्तु तुम आये बड़े कुसमय।'

'मैं तुम्हारा वध अवश्य करूँगा। मैं आज ही तुम्हारा अन्त करने के लिए बाध्य हूँ और मुझे अपना काम करना होगा।'

'यह तो बड़ी असुविधा की बात है। मुझे अभी कई पत्र लिखने हैं। मैं बहुत व्यस्त हूँ फिर आ जाना, मैं तुम्हें तैयार मिलूँगा।'

गुरुदेव बराबर अपने पत्रों की लिखा-पढ़ी करते रहे। हत्यारा उनका यह धैर्य और आत्म-संयम देख सन्नाटे में आ गया और अप्रतिभ हो खिसक गया। (अणुव्रत से साभार)

SR RUNGTA GROUP

Caring for Land and People…

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

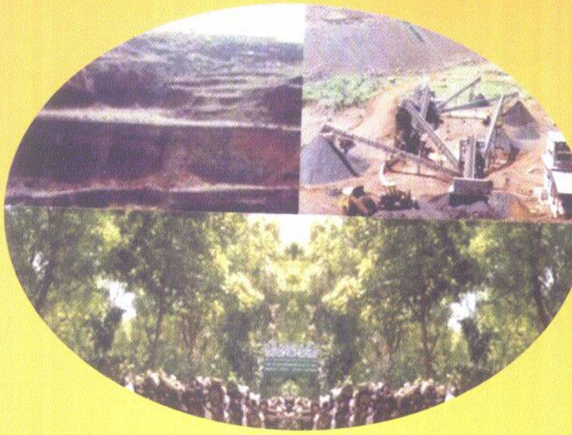

- ***IRON ORE*** - *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** - *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 July, 2011
RNI Regd. No. 2868/68

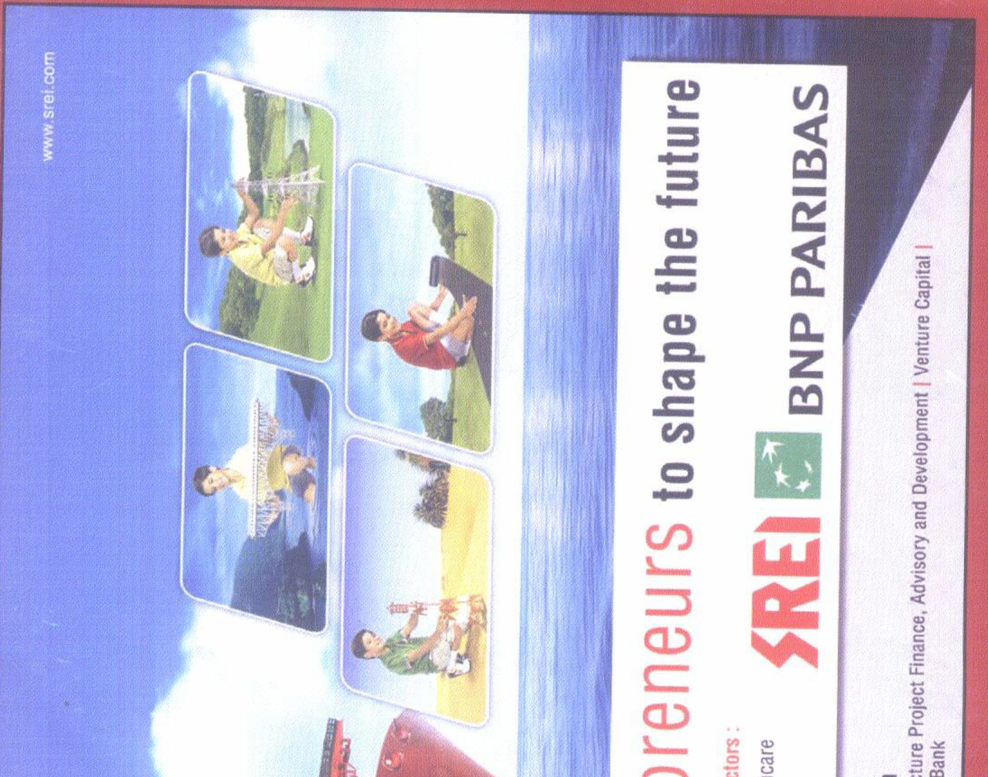

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com

T/WB/LM-087
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
JOINT GENERAL SECRETARY, A.I.M.F
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL

समाज विकास

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• जुलाई २०११ • वर्ष ६२ • अंक ७

मारवाड़ी दानशील एवं कर्मठ समाज है

- जगन्नाथ पहाड़िया, राज्यपाल, हरियाणा

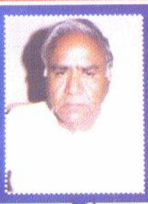

रामानन्द अग्रवाल

छतीसगढ़ सम्मेलन अध्यक्ष निर्वाचित

सुरेन्द्र लाठ

उत्कल प्रदेश अध्यक्ष पुनः निर्वाचित

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

हनुमान सरावगी का देहावसान

एवरेस्ट विजयारोही प्रेमलता अग्रवाल समाज एवं देश की गौरव

मारवाड़ी सम्मलेन द्वारा भव्य स्वागत एवं सम्मान

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

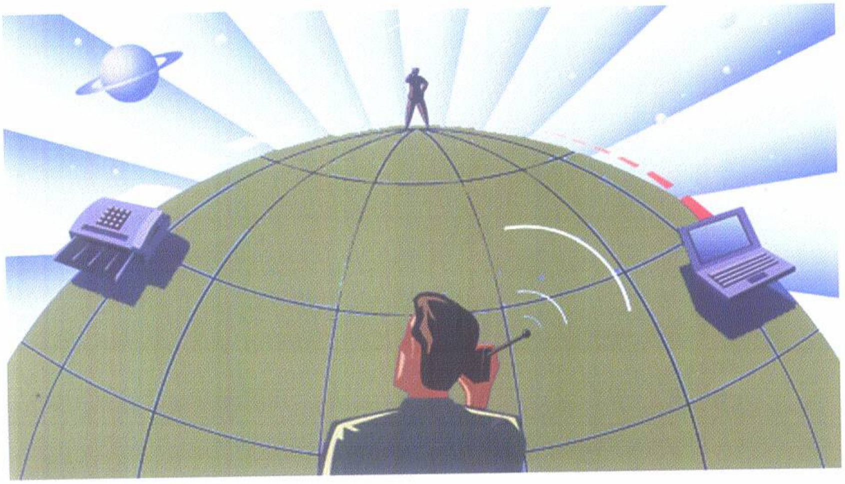

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

समाज विकास

◆ जुलाई २०११ ◆ वर्ष ६२ ◆ अंक ७ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक *पृष्ठ संख्या*

चिट्ठी आई है ४
प्रतिभा : शशांक केडिया ४
सम्पादकीय : भ्रष्टाचार : गणतंत्र को खतरा – ***सीताराम शर्मा*** ५
अध्यक्षीय : बदलते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य... ***हरि प्रसाद कानोड़िया*** ७
शोक सभा : स्व. नन्द किशोर जालान को श्रद्धांजलि ८
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हनुमान सरावगी का स्वर्गवास ८
...एवरेस्ट विजयारोही प्रेमलता अग्रवाल का सार्वजनिक अभिनन्दन ९-११
जन्मदिन व शादी की सालगिरह में भी दिखावा – ***संतोष सराफ*** १३
परोपकारी मारवाड़ी समाज....... – ***परमजीत नायडू*** १४
प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने किया मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान १५-१६
हिन्दी को अल्पसंख्यक भाषायी दर्जा १७
वैवाहिक आचार संहिता १७
हम साथ है १८
पत्रकारिता पर हावी होती खुदगर्जी – ***शंकर जालान*** १८
पश्चिम बंगाल हिन्दी अकादमी का गठन / मारवाड़ी सम्मेलन उच्च शिक्षा समिति १९
प्रान्तीय समाचार – छत्तीसगढ़ी मारवाड़ी फेडरेशन.... २०
प्रान्तीय समाचार – बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन.... २१
प्रान्तीय समाचार – पद्मभूषण राजश्री बिड़ला का अभिनन्दन समारोह २१
प्रान्तीय समाचार – बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की त्रैमासिक गतिविधियाँ २२
प्रान्तीय समाचार – ... महिला सम्मेलन की गतिविधियां २२
प्रान्तीय समाचार – श्री सुरेन्द्र लाठ उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पुनः अध्यक्ष निर्वाचित २३
गीत – माणखो २५
हम दूध में शक्कर की तरह रहेंगे... २६
समाज विकास में वर-वधू परिचय २७
हंसगुल्ले २८
SMS की दुनिया / राजस्थान में मिला सरस्वती नदी का मीठा जल २९
पुस्तक समीक्षा / गीत ३०-३१
कहानी – भूत – ***शिव सारदा*** ३३
लघु कथा – नफा नुकसान – ***डॉ. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी*** ३४

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा
प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

पानी फेरा बुलबुला.....

जून का अंक प्राप्त हुआ। पूर्व अध्यक्ष नन्दकिशोर जी जालान हमारे बीच नहीं रहे। अपने कार्यकाल में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समाज एवं देश को कितना लाभ हुआ, शब्दों में उसकी गणना नहीं की जा सकती।

मानव जीवन बड़ा अमूल्य है। यह भगवान का जागृत रुप है। कबीरदास की साखी - "पानी फेरा बुलबुला, अस मानुष की जात, देखत ही छिप जाएगी, ज्यों तारा प्रभात।" हर जीव को इस दौर से गुजरना पड़ेगा। स्वर्गीय नन्दकिशोर जी जालान में सत्य, प्रेम, दया, करुणा, क्षमा, अहिंसा, अक्रोध, शान्ति, ईमानदारी, सुन्दरता, त्याग, उदारता, शालीनता, शिष्टता, मधुरता, स्वच्छता, तथा न्याय आदि गुण कूट-कूट कर भरे थे। उनकी श्रद्धांजलि का सुख समाज को तभी मिलेगा जब उनमें व्याप्त गुणों को हम अपने आप में उतारने का प्रयास करेंगे। उनकी संक्षिप्त जीवनी का सार समाज के हर तबके के व्यक्ति को मार्गदर्शन में साथ देगा।

शम्भु चौधरी द्वारा लिखा "लोकतंत्र की भाषा" लेख अपने आप में अद्वितीय है। हम भाषणों में बहुत जोर से भाषण देते हैं कि हमारा समाज एकजूट हो। परन्तु चुनाव के दौरान अगर समाज का कोई जूझारू व्यक्ति खड़ा होकर सफल होने का प्रयास करता है तो ६० प्रतिशत समाज के लोग उन्हें सफल बनाने में साथ नहीं देते। यह समाज की विडम्बना ही कही जायेगी।

श्री कानोड़िया जी ने अपने भाषण के तहत सम्मेलन में युवाओं एवं महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पर जोर देते हुए कहा कि संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिये अधिक से अधिक संख्या में नये सदस्य बनाये जाये। अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आज के परिवेश में सम्मेलन के पदाधिकारियों में एक भी महिला का नाम अंकित नहीं है।

– सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर, बिहार

चिट्ठी आई है

शुभकामनाएं

समाज विकास का मई ११ अंक पढ़ा आज
सुन्दर पत्र व कविताओं से जाना पत्रिका का राज।

पुस्तक, पाठक और पढ़ा पुस्तकालय
जाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का नया कार्यालय।

भानीराम जी ने बताया "समाज और संस्कार"
"संयुक्त परिवारों में आ रही बदलाव की बयार।"

ममता, मारवाड़ी व मार्क्सवादी का पढ़ा राज
पढ़कर पूरी पत्रिका मित्र को भेंट कर दी आज।

पत्रिका के प्रति नैनीताल से प्रेषित है शुभकामनाएं
"समाज विकास" परिवार की पूरी हों सभी मनोकामनाएं।

डा. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी
नैनीताल, उत्तराखण्ड

प्रतिभा

शशांक केडिया

नेशनल कैमिस्ट्री ओलम्पियाड में चयनित

मारवाड़ी समाज के होनहार युवा शशांक केडिया को इस वर्ष के नेशनल कैमिस्ट्री ओलम्पियाड २०११ के लिए चयनित किया गया है। १७ वर्षीय शशांक ने कक्षा दस एवं बारह की परीक्षाएं भी बेहतर नतीजों के साथ पास की थी। आईआईटीजी में १६१ वाँ एवं राष्ट्रीय स्तर पर चौथा स्थान हासिल किया, जिसकी राज्य के मुख्यमंत्री ने भी सराहना की थी। शशांक के पिता श्री नवीन केडिया एवं माता श्रीमती अंजु केडिया तथा दादा-दादी श्रीमती पुष्पा देवी एवं श्री दीनदयाल केडिया को ही नहीं बल्कि पूरे समाज को शशांक की इस उपलब्धि पर नाज है।